सेवा समर्पण

मूल्य ₹ 20

वर्ष-41, अंक-12, कुल पृष्ठ-36, भाद्रपद-आश्विन, विक्रम सम्वत् 2081, सितम्बर, 2024

महर्षि दधीचि

समाज की भलाई के लिए सर्वस्व न्योछावर

बढेरा भवन में शुभचिंतक बैठक

गत 18 अगस्त को अशोक विहार स्थित सेवा भारती बढेरा भवन परिसर में शुभचिंतक बैठक हुई। जिसमें लगभग 50 शुभचिंतक/सहयोगी/दानदाता/चिकित्सक उपस्थित रहे। कार्यक्रम का सफल संचालन श्री क्षितिज मित्तल ने किया। प्रकल्प प्रमुख श्री रतन लाल गुप्ता ने बढेरा भवन परिसर एवं सेवा भारती के कार्यों की विस्तृत जानकारी दी। इस अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, दिल्ली प्रांत के प्रांत कार्यवाह श्री अनिल गुप्ता एवं सेवा भारती दिल्ली प्रांत के अध्यक्ष श्री रमेश अग्रवाल का प्रेरणादायी उद्‌वोधन प्राप्त हुआ। केन्द्र की प्रबंध समिति के सदस्य डॉ. कीर्तिवर्धन साहनी, श्री आर.के. जैन एवं बहन नीरा गोयल ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। बैठक में भिवानी मैत्री संघ ने 600 डायलिसिस सहयोग की स्वीकृति प्रदान की। विशेष बात यह रही कि कार्यक्रम में रामकृष्ण सेवा संस्थान, जीवदया फाउंडेशन और जैन समाज के प्रतिनिधि भी उपस्थित हुए। कार्यक्रम से संबंधित चित्र नीचे दिये जा रहे हैं।

श्री अनिल जी
माननीय प्रांत कार्यवाह

श्री अशोक गर्ग
माननीय अध्यक्ष, वढेरा भवन

श्री रमेश अग्रवाल, माननीय
प्रांत अध्यक्ष, सेवा भारती

डॉ. दीपक सिंगला, मेडिकल
डायरेक्टर, महाराजा अग्रसेन स्पताल

श्री रतन लाल गुप्ता
प्रकल्प प्रमुख, वढेरा भवन

संरक्षक
श्रीमती इन्दिरा मोहन

परामर्शदाता
डॉ. राम कुमार

सम्पादक
डॉ. शिवाली अग्रवाल

कार्यालय
सेवाकुंज, 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23345014/15
E-mail: info@sewabhartidelhi.org
Website: www.sewabhartidelhi.org

पृष्ठ सज्जा
मणिशंकर कुमार

एक प्रति : 20/-रुपये
वार्षिक शुल्क : 200/-रुपये

सेवा समर्पण

वर्ष-41, अंक-12, कुल पृष्ठ-36, सितम्बर, 2024

विषय - सूची

शीर्षक	लेखक	पृ.
संपादकीय		4
समाज की भलाई के लिए सर्वस्व न्योछावर	आचार्य अनमोल	6
सनातन धर्म में श्राद्धों के प्रावधान का महत्व	भूषण लाल पाराशर	8
आध्यात्मिक एकता		11
कविता : बरसत मेघ	सरोजिनी चौधरी	11
सेवा के 60 साल	विनोद बंसल	12
भगवान को याद करते रहिये	हेमन्त शर्मा	15
कविता : गुरु की महिमा	विनीशा	15
मरीजों के लिए वरदान है डायलिसिस केंद्र		16
दो जिंदगियों को रोशन कर गईं मोनिका सिंघल	मदन पांचाल	17
आलोचना सुनने के लिए बड़ा दिल चाहिए		18
लक्ष्मी पुन: लौटी!	प्रतिनिधि	19
परमार्थ है जीवन का परम उद्देश्य	प्रो. संदीप गौड़	20
अपने बच्चों को सुसंस्कारी बनाएं	दुर्गाशंकर त्रिवेदी	21
सेवा भारती के कार्यों में नारीशक्ति की भूमिका	डॉ. निर्मला सिंह	22
आयुर्वेद के अनुसार वर्षा ऋतु में आहार-विहार	डॉ. निर्मला सिंह	23
कहानी : कमाने वाली बहू	प्रियंका पटेल	24
सेवा भारती की गतिविधियाँ		26

पाठकों से अनुरोध

सेवा समर्पण के सुधी पाठकों से अनुरोध है कि वे हर अंक में प्रकाशित लेखों और महापुरुषों के विचारों पर अपनी राय अवश्य भेजें।

पता : संपादक, सेवा समर्पण,
13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23345014/15, E-mail: info@sewabhartidelhi.org

वक्फ बोर्ड की खतरनाक हरकतें

अभी पूरे देश में पटना जिले के फतुहा के पास स्थित गोविंदपुर गाँव की चर्चा हो रही है। इस गाँव में 95 प्रतिशत से अधिक हिंदू हैं। इसके बावजूद वक्फ बोर्ड ने इस गाँव की पूरी जमीन पर अपना दावा ठोंका है। वहीं, गाँव के हिंदुओं का कहना है कि यहाँ वे लोग पीढ़ियों से रह रहे हैं। इसलिए यहाँ वक्फ संपत्ति का कोई मतलब नहीं है। पटना के जिलाधिकारी ने भी पड़ताल कर कहा है कि यहाँ की जमीन स्थानीय निवासियों की ही है। इसके बाद मामला पटना उच्च न्यायालय पहुँचा। उच्च न्यायालय ने वक्फ बोर्ड से कागजात माँगे, तो उसने कहा कि कागज नहीं है। यानी जानबूझकर वक्फ बोर्ड हिंदुओं को परेशान कर रहा है।

कुछ समय पहले वक्फ बोर्ड ने तमिलनाडु के एक 1,500 वर्ष पुराने मणेंडियावल्ली चंद्रशेखर स्वामी मंदिर और उसके पास के गाँव की 369 एकड़ जमीन को अपना बता दिया है। अभी यह मामला वक्फ प्राधिकरण में चल रहा है। अब आप कल्पना करिए कि यदि आपके घर और जमीन पर कोई दावा करने लगे, तो आप पर क्या बितेगी।

दूसरा मामला श्रीकृष्ण की नगरी बेट द्वारका का है। शास्त्र बताते हैं कि बेट द्वारका में ही श्रीकृष्ण रहे और यहीं श्रीद्वारकाधीश मंदिर है। अभी भी यहाँ समुद्र के नीचे श्रीकृष्ण के महल के अवशेष हैं। उन्हीं अवशेषों को देखने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी कुछ समय पहले समुद्र के नीचे गए थे। इसके बाद भी हजारों वर्ष पुराने इस स्थान को भी वक्फ बोर्ड ने अपना बताते हुए कुछ ही वर्ष पहले गुजरात उच्च न्यायालय में एक मुकदमा दायर किया था। इस मुकदमे की सुनवाई करने वाले न्यायाधीश भी वक्फ बोर्ड के इस दावे से चकित रह गए थे। इसके बाद उन्होंने मुकदमा दायर करने वालों को फटकार भी लगाई थी।

वक्फ अधिनियम-1995 की धारा 89 के अनुसार वक्फ बोर्ड आपकी जमीन पर कब्जा करने से पहले आपको बताने के लिए बाध्य नहीं है, लेकिन वहीं दूसरी तरफ यदि आप वक्फ बोर्ड से कोई जमीन वापस लेना चाहते हैं, तो आपको वक्फ प्राधिकरण में जाने से 60 दिन पहले वक्फ बोर्ड को इसकी जानकारी देनी होगी।

आश्चर्य की बात यह है कि हजारों वर्ष पुराने इन स्थानों को वह वक्फ बोर्ड अपना बता रहा है, जिसका कुछ वर्ष पहले ही जन्म हुआ है। वक्फ बोर्ड को चलाने वाले लोग जिस मजहब यानी इस्लाम को मानते हैं, वह भी केवल 1,400 वर्ष पुराना है।

तीसरा उदाहरण है केरल के एर्नाकुलम का। यहाँ के चेराई निवासी एक हिंदू को किसी कारणवश अपनी जमीन बेचनी थी। इसके लिए वे निबंधन कार्यालय गए। वहाँ निबंधक ने कहा कि वे अपना मकान और जमीन बेच नहीं सकते हैं, क्योंकि उनकी संपत्ति पर वक्फ बोर्ड ने दावा कर रखा है। इसके बाद चेराई गाँव के अन्य लोग भी निबंधन कार्यालय गए, तो पता चला कि लगभग 600 हिंदू परिवारों के घरों और जमीन को वक्फ बोर्ड ने अपना बता रखा है।

चौथा मामला मुंबई का है। जोगेश्वरी के इस्माईल कॉलेज के पास लगभग 1,200 करोड़ रुपए की सरकारी जमीन है। कुछ दिन पहले महाराष्ट्र सरकार ने वहाँ कुछ निर्माण कराने के उद्देश्य से उस जमीन की नापी करने के लिए कर्मचारियों को भेजा। उन्हें देखकर वहाँ मुसलमानों की भीड़ जमा हो गई। उन लोगों ने कहा कि यह जमीन वक्फ बोर्ड की है और वहाँ से कर्मचारियों को भगा दिया।

अब प्रश्न उठता है कि क्या वक्फ बोर्ड इतना शक्तिशाली है कि वह जिस जमीन पर हाथ रखता है, वह उसकी हो जाती है! जी, बिल्कुल यही स्थिति है। सत्ता के भूखे नेताओं ने वक्फ बोर्ड को इतना शक्तिशाली बना दिया है कि अब वह 'अजगर' बनकर भारत की जमीन निगल रहा है। यही कारण है कि आज रेलवे और सेना के बाद सबसे

अधिक जमीन वक्फ बोर्ड के पास है।

वक्फ बोर्ड को 'अजगर' बनाया है सोनिया-मनमोहन सरकार ने। 2014 के लोकसभा चुनाव को देखते हुए मुसलमानों को खुश करने के लिए सोनिया-मनमोहन सरकार ने 20 सितंबर, 2013 को वक्फ अधि नियम-1995 में संशोधन किया। इससे वक्फ बोर्ड को अपार शक्ति मिली। अब वक्फ बोर्ड उस शक्ति का प्रयोग हिंदुओं की जमीन और सरकारी भूखंडों को कब्जाने में कर रहा है।

दरअसल, वक्फ अधिनियम-1995 की धारा 40 के अनुसार किसी भी संपत्ति को वक्फ संपत्ति घोषित करने से पहले उसके मालिक को बताना आवश्यक नहीं है। वक्फ वाले चुपके से किसी संपत्ति को वक्फ संपत्ति घोषित कर देते हैं। बाद में जब उसके मालिक को पता चलता है, तो वह दंग रह जाता है। यही नहीं, वह वक्फ की इस बदमाशी के विरोध में किसी न्यायालय में मुकदमा भी दायर नहीं कर सकता है। वह मुकदमा केवल और केवल वक्फ प्राधिकरण में दायर कर सकता है और अधिकतर मामलों में वक्फ प्राधिकरण वक्फ के पक्ष में ही निर्णय देता है। यानी जिसकी भी जमीन पर एक बार वक्फ बोर्ड कब्जा कर लेता है, वह उसकी हो ही जाती है। आप चाहकर भी कुछ नहीं कर सकते हैं, क्योंकि वक्फ बोर्ड शक्ति लेकर बैठा है। और यह शक्ति उसे सोनिया-मनमोहन सरकार ने दी है।

वक्फ अधिनियम-1995 की धारा 89 के अनुसार वक्फ बोर्ड आपकी जमीन पर कब्जा करने से पहले आपको

वक्फ बोर्ड को 'अजगर' बनाया है सोनिया-मनमोहन सरकार ने। 2014 के लोकसभा चुनाव को देखते हुए मुसलमानों को खुश करने के लिए सोनिया-मनमोहन सरकार ने 20 सितंबर, 2013 को वक्फ अधि नियम-1995 में संशोधन किया। इससे वक्फ बोर्ड को अपार शक्ति मिली। अब वक्फ बोर्ड उस शक्ति का प्रयोग हिंदुओं की जमीन और सरकारी भूखंडों को कब्जाने में कर रहा है।

बताने के लिए बाध्य नहीं है, लेकिन वहीं दूसरी तरफ यदि आप वक्फ बोर्ड से कोई जमीन वापस लेना चाहते हैं, तो आपको वक्फ प्राधिकरण में जाने से 60 दिन पहले वक्फ बोर्ड को इसकी जानकारी देनी होगी। यही नहीं, आपके आवेदन के बाद वक्फ प्राधिकरण वक्फ बोर्ड को नोटिस जारी करेगा, तो इसका खर्चा आपको ही देना होगा। यह व्यवस्था वक्फ अधिनियम-1995 की धारा 90 में की गई है।

वक्फ बोर्ड की इन शक्तियों पर अंकुश लगाने के लिए कई संगठन वर्षों से माँग कर रहे हैं। यही कारण है कि गत 8 अगस्त को केंद्रीय संसदीय और अल्पसंख्यक कार्य मंत्री श्री किरेन रिजिजू ने लोकसभा में वक्फ संशोधन (विधेयक)-2024 प्रस्तुत किया। इस विधेयक में वक्फ अधिनियम-1995 का नाम बदलकर 'एकीकृत वक्फ प्रबंधन, सशक्तिकरण, दक्षता और विकास अधि नियम-1995' कर दिया गया है।

इस विधेयक के प्रस्तुत होते ही विपक्ष ने भारी हंगामा किया। विपक्षी नेताओं ने इस विधेयक को मुस्लिम विरोधी बताते हुए एक बार फिर से देश को दिग्भ्रमित करने का प्रयास किया। इसके साथ ही कुछ नेताओं ने इस विधेयक को संयुक्त संसदीय दल (जे.पी.सी.) के पास भेजने का सुझाव दिया। इसके बाद सरकार ने सदन में प्रस्ताव रखा कि विधेयक को जे.पी.सी. के पास भेजा जाए और इस तरह यह महत्वपूर्ण विधेयक जे.पी.सी. के सामने चला गया है। जे.पी.सी. की अध्यक्षता वरिष्ठ भाजपा सांसद जगदंबिका पाल कर रहे हैं। अब जे.पी.सी इस विधेयक का अध्ययन करेगी और जो भी उसका सुझाव होगा, उसे सरकार के पास भेज देगी। आशा है कि जे.पी.सी तेजी से यह कार्य करेगी और सरकार को अपने सुझाव शीघ्रातिशीघ्र भेजेगी।

वास्तव में प्रस्तावित विधेयक का कानून बनना बहुत ही आवश्यक है। विपक्ष को समझना चाहिए कि यह विधेयक भारत और भारतीयता के हित में है। समस्त सनातनियों को भी इस विधेयक को लेकर जन-जागरण का काम करना चाहिए। लोगों को बताया जाना चाहिए कि वक्फ अधि नियम-1995 में संशोधन होने से भारत का 'इस्लामीकरण' रुकेगा। ❐

समाज की भलाई के लिए सर्वस्व न्योछावर

■ आचार्य अनमोल

भारतीय इतिहास में अनेक दानी, त्यागी और सेवाभावी हुए हैं, किंतु मानव कल्याण के लिए अपना अत्मोत्सर्ग करने वाले महर्षि दधीचि का नाम सर्वोपरि माना जाता है। उन्होंने संसार की भलाई के लिए अपनी अस्थियों का दान कर दिया था। इसीलिए भारतीय इतिहास में लोक-कल्याण के लिए आत्म-त्याग करने वालों में महर्षि दधीचि का नाम बड़े ही आदर के साथ लिया जाता है।

वास्तव में उनका यह कार्य वर्तमान में बहुत ही आदर्श पूर्ण है। हमें महर्षि दधीचि से बहुत कुछ सीखना चाहिए। अपने व्यक्तिगत स्वार्थ को छोड़कर, अपने परिवार के स्वार्थ से बाहर जाकर, समाज की तथा राष्ट्र की सेवा में समर्पित हो जाना चाहिए। महर्षि दधीचि का उदाहरण यही हमें सिखाता है।

वर्तमान में महर्षि दधीचि का उदाहरण युवाओं के लिए नितांत आवश्यक है। इस समय सभी जगह स्वार्थ-परायणता फैली हुई है। समाज में कलुषित भावना वाले लोग जातीय भेद करके, भाषा भेद करके, अपने क्षेत्र विशेष का भेद करके छद्मरूप से विद्वेष भावना फैला रहे हैं। ऐसे में 'वसुधैव कुटुंबकम्' का भाव मन में लेकर हमें समाज सेवा में जुट जाना चाहिए। जब हम नि:स्वार्थ होकर समाज की सेवा करेंगे, तभी समाज में समरसता का भाव जाग्रत होगा और तभी भारत को अपनी माता मानने का भाव साकार हो पाएगा। यह प्रण लेने के बाद ही हम मुखर होकर कह पाएँगे कि 'माता भूमि: पुत्रोऽहं पृथिव्या:' अर्थात् भारत मेरी माता है और मैं इसका पुत्र हूँ।

लोगों की भलाई करने वालों के प्रसंग में वर्तमान में महर्षि दधीचि को तपस्या और पवित्रता की प्रतिमूर्ति के रूप में श्रद्धा के साथ याद किया जाता है।

जन्म का परिचय

यास्क के मतानुसार दधीचि की माता चित्ति और पिता अथर्वा थे, इसीलिए इनका नाम दधीचि हुआ था। एक अन्य पौराणिक कथा के अनुसार ये कर्दम ऋषि की कन्या शांति के गर्भ से उत्पन्न अथर्वा के पुत्र थे। अन्य पुराण ानुसार ये शुक्राचार्य के पुत्र थे। उनकी पत्नी का नाम गभस्तिनी था। भगवान शिव के प्रति अटूट भक्ति और वैराग्य में इनकी जन्म से ही निष्ठा थी। महर्षि दधीचि वेद शास्त्रों के पूर्ण ज्ञाता और स्वभाव के बड़े ही दयालु थे। वे सदा दूसरों का हित करना अपना परम धर्म समझते थे। गंगा के तट पर ही उनका आश्रम था। उनके व्यवहार से उस वन के पशु-पक्षी तक संतुष्ट रहते थे। कोई अतिथि जब उनके आश्रम पर आता था,

तो वे ''अतिथि देवो भव'' का भारतीय आदर्श अपनाकर स्वयं तथा उनकी पत्नी अतिथि की पूर्ण श्रद्धा भाव से सेवा करते थे।

अस्थियों को दान करने का प्रसंग

देवलोक पर वृत्रासुर राक्षस के अत्याचार बढ़ते ही जा रहे थे। वह देवताओं को भाँति-भाँति से परेशान कर रहा था। इन्द्र सहित देवताओं को देवलोक से निकाल दिया था। सभी देवता अपनी वेदना लेकर त्रिदेव- ब्रह्मा, विष्णु व महेश के पास गए, लेकिन कोई भी उनकी समस्या का तत्काल निदान न कर सका। बाद में ब्रह्मा जी ने देवताओं को कहा कि वृत्रासुर को किसी भी अस्त्र-शस्त्र से नहीं मारा जा सकता लेकिन उस दानव को मारने के लिए एक अचूक उपाय बताता हूँ। पृथ्वी लोक में दधीचि नाम के एक महर्षि रहते हैं। उन्होंने अनेक वर्ष कठोर तपस्या की है। उस तपस्या के प्रभाव से उनकी अस्थियाँ वज्र के समान हो गई हैं। यदि वे अपनी अस्थियों का दान कर दें तो उन अस्थियों से एक वज्र बनाकर उससे वृत्रासुर को मारा जा सकता है। महर्षि दधीचि की अस्थियों में ही वह ब्रह्म तेज है, जिससे वृत्रासुर राक्षस मारा जा सकता है। इसके अतिरिक्त और कोई दूसरा उपाय नहीं है।

अन्त में देवराज इन्द्र को पृथ्वीवासी लोगों की रक्षा व देवताओं की भलाई के लिए अन्य देवताओं के साथ महर्षि दधीचि की शरण में जाना पड़ा। महर्षि दधीचि ने इन्द्र से आश्रम में आने का कारण पूछा। इन्द्र ने महर्षि को अपनी वहाँ आने की सारी व्यथा सुनाई, तो महर्षि दधीचि ने कहा कि- 'मैं संसार की रक्षा के लिए क्या कर सकता हूँ?' देवताओं ने उन्हें त्रिदेवों की कही हुई बातें बताई तथा उनकी अस्थियों का दान माँगा। महर्षि दधीचि ने बिना किसी सोच-विचार के अपनी अस्थियों का दान देना स्वीकार कर लिया। उन्होंने समाधि लगाई और अपनी देह त्याग दी। अब देवताओं के समक्ष ये समस्या आई कि महर्षि दधीचि के शरीर के माँस को कौन उतारे? तब इन्द्र ने कामधेनु गाय को बुलाया और उनसे महर्षि के शरीर से मांस उतारने के लिए प्रार्थना की। कामधेनु ने अपनी जीभ से चाट-चाटकर महर्षि के शरीर का माँस उतार दिया। बाद में केवल अस्थियों का कंकाल रह गया था। उन्हीं वज्र रूपी अस्थियों से वृत्रासुर का वध करके संसार को भय मुक्त कर दिया गया। धन्य हैं महर्षि दधीचि, जिन्होंने संसार की भलाई के लिए अपने प्राण न्योछावर कर दिए। ❐

धन्यवाद सेवा भारती

मैं सेवा भारती को हृदय से धन्यवाद करती हूं। सेवा भारती के कार्यकर्ताओं ने मुझमें विश्वास जगाकर, काम सिखाकर स्वावलंबी बना दिया। आज मैं सक्षम हूं, अपनी मेहनत की कमाई से घर के खर्चे चला रही हूं। किसी पर निर्भर नहीं हूं। परिवार में बच्चों के साथ बुजुर्ग माँ है। इन सबकी देखभाल करते हुए मैं सेवा कार्य भी करती हूं। मैं चाहती हूं कि मेरी जैसी बहनें कामयाब हों।

-मीनू शर्मा

मैं सेवा भारती का धन्यवाद करती हूं। इस संगठन ने मुझे खुद अपने पैरों पर खड़ा होना सिखाया। यहां से मुझे ड्राइवर की ट्रेनिंग मिली और आज मैं अपने परिवार के भरण-पोषण योग्य हो गई हूं। सेवा भारती को इस तरह के रोजगार वाला कार्य चलाने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

-रेनू सिंह

सनातन धर्म में श्राद्धों के प्रावधान का महत्व

■ भूषण लाल पाराशर

प्रेतान् पितृश्च निर्दिश्य भोज्यं यत प्रियमात्मनः।
श्रद्धया दीयते यत्र् तत्श्राद्धम् परिचक्षते॥
आश्विनस्य कृष्णपक्षे एकोनाविशंति तारिकायामः (19)
द्धि अक्तूबर तारिका पर्यन्तम् पार्वण श्राद्धः विद्यंते॥

शास्त्रों में मनुष्यों के लिए मुख्यतः पांच ऋणों में तीन ऋण निर्धारित किए गए हैं। देव ऋण, ऋषि ऋण और पितृ ऋण। इन तीनों में से पितृ ऋण को उतारना जरूरी होता है क्योंकि जो माता-पिता अपनी संतान की लंबी आयु, निरोगी जीवन और सुख सौभाग्य की बढ़ोतरी के लिए बहुत सारे प्रयास करते हैं, उनका ऋण ना चुकाने से शान्ति की प्राप्ति नहीं होती है। सनातन धर्म में पितरों को कम से कम एक बार श्राद्धों में अवश्य स्मरण करते हैं इसे श्राद्ध कहते हैं, ये श्राद्ध आश्विन कृष्णपक्ष में मनाया जाता है। पितृपक्ष केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं है, बल्कि यह हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है, जो हमें हमारे पितरों के प्रति हमारी जिम्मेदारियों का बोध कराता है। इस पर्व के माध्यम से हम अपने पितरों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हैं और उनसे आशीर्वाद प्राप्त करते हैं, जो हमारे जीवन को सुखमय और समृद्ध बनाता है। श्राद्ध में पिंडदान, तर्पण तथा श्राद्ध भोज आदि कर्मों को करना अत्यंत आवश्यक माना गया है।

पिंडदान- पिंडदान के समय, चावल, जौ, तिल, और गाय के दूध से बने पिंड (गोल आकार के खाद्य पदार्थ) को पितरों की आत्मा के निमित्त अर्पित किया जाता है। पिंडदान की प्रक्रिया अत्यंत विधिपूर्वक की जाती है, और इसे परिवार के सबसे बड़े पुत्र द्वारा संपन्न किया जाता है। अन्य परिवारजन भी इसमें भाग ले सकते हैं, लेकिन बड़े पुत्र का विशेष महत्व है।

तर्पण- तर्पण का अर्थ होता है जल अर्पित करना। यह जल अर्पण पितरों की आत्मा की तृप्ति के लिए किया जाता है। तर्पण के दौरान, हाथ जोड़कर

जल को तिल, कुशा, और जौ के साथ मिलाकर पितरों को अर्पित किया जाता है। इस प्रक्रिया के द्वारा पितरों को संतोष प्राप्त होता है और वे अपने वंशजों को आशीर्वाद प्रदान करते हैं।

श्राद्ध भोज– श्राद्ध के दिन ब्राह्मणों और गरीबों को भोजन कराने की परंपरा है। यह भोजन पितरों के निमित्त अर्पित किया जाता है और इसका उद्देश्य पितरों की आत्मा की शांति और तृप्ति है। यह माना जाता है कि इस भोजन को पितर स्वयं ग्रहण करते हैं, जिससे उनकी आत्मा संतुष्ट होती है।

श्राद्ध कैसे मनाना चाहिये? श्राद्ध पितृ-पक्ष (पूर्णिमा से अमावश्या तक) के 16 दिनों में शारदीय नवरात्रों से पूर्व वाले पक्ष में मनाये जाते हैं। जिस तिथि को पितरों की मृत्यु होती है उसी तिथि को उनका श्राद्ध मनाना चाहिये, दाह संस्कार की तिथि को नहीं। शास्त्रों के अनुसार पितृ ऋण से मुक्त होने के लिए श्राद्ध किया जाता है। श्राद्ध में हम अपने पितरों की तृप्ति के लिए श्रद्धापूर्वक प्रार्थना करते हैं। श्राद्ध में श्रद्धा के द्वारा पितरों को भोजन और जल आदि समर्पित किया जाता है। मान्यता के अनुसार पितृपक्ष में यमराज हर साल सभी आत्माओं को मुक्त कर देते हैं जिससे वह अपने लोगों के द्वारा किए गए तर्पण को ग्रहण कर सकें। पितृ अपने कुल की हमेशा रक्षा करते हैं। ऐसा माना जाता है कि श्राद्ध को 3 पीढ़ियों तक निभाया जाना चाहिए। शास्त्रों में बताया गया है अगर पितर नाराज हो जाए तो जीवन में समस्याओं का सामना करना पड़ता है जिसे पितृ ऋण कहते हैं।

इस परंपरा को पंचबली भी कहा जाता है। जिसकी क्रिया निम्नलिखित हैं।

गोबलि (पत्ते पर) – पश्चिम दिशा की ओर पत्ते पर गाय के लिए खाना निकालते हैं। इसमें भोजन का पहला ग्रास गाय को दिया जाता है क्योंकि गरुड़ पुराण में गाय को वैतरणी नदी से पार लगाने वाली कहा गया है। गाय में ही सभी देवता निवास करते हैं। गाय को भोजन देने से सभी देवता तृप्त होते हैं इसलिए श्राद्ध का भोजन गाय को भी देना चाहिए।

श्वानबलि (पत्ते पर) – पंचबली का एक भाग कुत्तों को खिलाया जाता है। कुत्ता यमराज का पशु माना गया है, श्राद्ध का एक अंश इसको देने से यमराज प्रसन्न होते हैं। शिवमहापुराण के अनुसार, कुत्ते को रोटी खिलाते समय बोलना चाहिए कि– यमराज के मार्ग का अनुसरण करने वाले जो श्याम और शबल नाम के दो कुत्ते हैं, मैं उनके लिए यह अन्न का भाग देता हूं। वे इस बलि (भोजन) को ग्रहण करें। इसे कुक्करबलि कहते हैं।

काकबलि (पृथ्वी पर)– पंचबली का एक भाग कौओं के लिये छत पर रखा जाता है। गरुड़ पुराण के अनुसार, कौवा यम का प्रतीक होता है, जो दिशाओं का फलित (शुभ-अशुभ संकेत बताने वाला) बताता है। इसलिए श्राद्ध का एक अंश इसे भी दिया जाता है। कौओं को पितरों का स्वरूप भी माना जाता है। श्राद्ध का भोजन कौओं को खिलाने से पितृ देवता प्रसन्न होते हैं और श्राद्ध करने वाले को आशीर्वाद देते हैं। श्राद्ध पक्ष में कौए को खाना खिलाने से यमलोक में पितर देवताओं को तृप्ति मिलती है। प्राचीन शास्त्रों के अनुसार यम ने कौवे को वरदान दिया था कि तुम्हें दिया गया भोजन पूर्वजों की आत्मा को शांति देगा। तब से यह प्रथा चली आ रही है।

देवादिबलि (पत्ते पर) – देवताओं को भोजन देने के लिए देवादिबलि की जाती है। इसमें पंचबली का एक भाग अग्नि को दिया जाता है जिससे ये देवताओं तक पहुंचता है। पूर्व में मुंह रखकर गाय के गोबर से बने उपलों को जलाकर उसमें घी के साथ भोजन के 5 निवाले अग्नि में डाले जाते हैं। इस तरह देवादिबलि करते हुए देवताओं को भोजन करवाया जाता है। ऐसा करने से पितर भी तृप्त होते हैं।

पिपीलिकादिबलि (पत्ते पर) – इसी प्रकार पंचबली का एक हिस्सा चींटियों के लिए उनके बिल के पास रखा जाता है। इस तरह चीटियां और अन्य कीट भोजन के एक हिस्से को खाकर तृप्त होते हैं। इस तरह गाय, कुत्ते, कौवे, चीटियों और देवताओं के तृप्त होने के बाद ब्राह्मण को भोजन दिया जाता है। इन सबके तृप्त होने के बाद ब्रह्मण द्वारा किए गए भोजन से पितृ तृप्त होते हैं।

पितृ दोष उतारने के नियम– पितृ ऋण उतारने के लिए जिस महीने की तारीख को माता-पिता आदि की मृत्यु हुई हो उस तिथि को श्राद्ध करना चाहिए। ऐसा करने से पितृ प्रसन्न होते हैं और आपको सौभाग्य प्राप्ति का आशीर्वाद देते हैं। माता पिता का श्राद्ध करने के लिए पुत्र को माता-पिता की मरण तिथि के मध्यांतर काल में स्नान करने के बाद श्राद्ध करना चाहिए और फिर ब्राह्मणों को भोजन करा कर खुद भोजन ग्रहण करना चाहिए। अगर किसी स्त्री का कोई पुत्र नहीं है तो वह खुद अपने पति का श्राद्ध कर सकती है। श्राद्ध का आरंभ भाद्रपद

शुक्ल पूर्णिमा को श्राद्ध करें इससे पितृ ऋण पूरा हो जाता है। पितरों की स्मृति में दान दें। गौशालायें बनवायें। निर्धन विद्यार्थियों को शिक्षा में सहायता करें, उन्हें छात्रवृत्ति दें। श्राद्ध करने से पितृ प्रसन्न होते हैं और अपने रिश्तेदारों को धन वैभव सुख शांति और आनंद का आशीर्वाद देते हैं। पितर हमेशा भगवान से यही प्रार्थना करते हैं कि उनके कुल में ऐसा बुद्धिमान पुरुष पैदा हो जो धन के लोभ से मुक्त होकर उनके लिए पिंडदान करें। एक ही सुपुत्र सात पीढ़ा का उद्धार कर सकता है। श्राद्ध करते समय पूरा परिवार साथ में हो ताकि वे भी संस्कारित हों।

श्राद्ध मनाने की विधि- सौभाग्यवती स्त्री द्धपति के जीवित रहते यदि पत्नी का देहान्त हो जायेऋ का श्राद्ध केवल नवमी तिथि को ही मनाया जाना चाहिये, मृत्यु वाली तिथि पर नहीं। यदि किसी की तिथि स्मरण न हो अथवा तिथि पर श्राद्ध न कर सके तो अमावस्या के दिन श्राद्ध कर सकते हैं। छोटे बच्चों का जो कम आयु में मृत्यु को प्राप्त होते हैं उन का श्राद्ध नही करना चाहिये। बौद्ध गया में श्राद्ध करने के बाद पितृ-पक्ष में श्राद्ध करना आवश्यक नहीं हैं। श्राद्ध करते समय कभी भी भोजन में प्याज, लहसुन और तामसी वस्तु का उपयोग नहीं करना चाहिए। हमेशा सात्विक ब्राह्मणो को शुद्ध और सात्विक भोजन करवाना चाहिए। श्राद्ध के दिनों में द्धपूरे पितृ पक्ष 16 दिनऋ कभी भी मांस मदिरा का सेवन नहीं करना चाहिए। ऐसा करने से पितृ नाराज होते हैं। सूक्ष्म आत्माओं को प्रसन्न करने के लिए तर्पण जौ, तिल और हरीकुषा से जल लेकर तर्पण करना चाहिए।

श्राद्ध वाले दिन सुबह उठकर स्नान-ध्यान करने के बाद पितृ स्थान को सबसे पहले शुद्ध कर लें। इसके बाद पंडित जी को बुलाकर पूजा और तर्पण करें। तर्पण जलादि लेकर भगवान सूर्य को अर्पण करे। इसके बाद पितरों के लिए बनाए गए भोजन के चार ग्रास निकालें और उसमें से एक हिस्सा गाय, एक कुत्ते, एक कौए और एक अतिथि के लिए रख दें। गाय, कुत्ते और कौए को भोजन देने के बाद ब्राह्मण को भोजन कराएं। भोजन कराने के बाद ब्राह्मण को वस्त्र और दक्षिणा भी दें।

तर्पण मंत्र पिता को - पिता को जल देने के लिए आप अपने गोत्र का नाम लेकर बोलें, गोत्रे अस्मतपिता (पिता का नाम) वसुरूपत् तृप्यतमिदं तिलोदकम गंगा जलं वा तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः। इसके बाद गंगा जल या अन्य जल में दूध, तिल और जौ मिलाकर 3 बार पिता को जलांजलि दें।

दादाजी-दादीजी को इस मंत्र के साथ दें जल- अपने गोत्र का नाम लेकर बोलें, गोत्रे अस्मत्पितामह (दादाजी-दादीजी का नाम) लेकर बोलें, वसुरूपत् तृप्यतमिदं तिलोदकम गंगा जलं वा तस्यै स्वधा नमः, तस्यै स्वधा नमः, तस्यै स्वधा नमः। इस मंत्र से पितामह को भी 3 बार जल दें पितामही को तस्यै स्वधा नमः बोलें।

माता को- माता को जल देने के नियम, मंत्र दोनों अलग होते हैं। क्योंकि शास्त्रों के अनुसार मां का ऋण सबसे बड़ा माना गया है। माता को जल देने के लिए अपने द्धगोत्र का नाम लेंऋ गोत्रे अस्मन्माता द्धमाता का नामऋ देवी वसुरूपास्त् तृप्यतमिदं तिलोदकम गंगा जल वा तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः। इस मंत्र को पढ़कर जलांजलि पूर्व दिशा में, उत्तर दिशा में और दक्षिण दिशा में दें।

पितरों का श्राद्ध एवं तर्पण करने से सात प्रकार की व्याधायें दूर होती हैं। पितृों का तर्पण न करने पर पितृदोष लगता है ऐसा शास्त्रों में कहा गया है। जैसा कि जीते जी भी माता-पिता और पितरो की सेवा करनी चाहिए और उनके देहान्त के बाद तन-मन-धन से उनका स्मरण करते रहना चाहिए। उससे धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष की प्राप्ति होती हैं। इससे पितृ प्रसन्न होते हैं तथा परिवार सुखी रहता है। वृद्धों के बारे में कहा भी है कि बड़ों का हमेशा आदर-सम्मान करना चाहिए। पितरों का श्राद्ध करने से सभी योनियों में निश्चित रूप से असर आता है। पांच ऋणों में पितृ ऋण का विशेष महत्व है। कर्म का फल स्वयं ही भोगना पडता है। अगर पितरों को प्रसन्न नहीं किया जाये तो पितृ दोष स्वयं हा लगता है। कहा है कि - **कोउ न काउ सुख दुख करदाता, निज कृत कर्म भोग सब भ्राता।**

पितरों की सेवा का फल श्राद्ध में तो मिलता ही है अपने जीवन के सुख-दुख कार्यों में भी मिलता है। अतः श्रद्धेय क्रियते श्राद्धंम, यह कथन उचित है। श्राद्धंम व पितयज्ञ स्यात। इसलिए इसे पितृ यज्ञ कहते हैं।

देवताभ्य पितृभ्यस्च महायोगिभ्य एव चः। नमः स्वधायै स्वहायै नित्यमेव नमो नमः।

श्री मातृ-पितृचरण कमलेभ्यो नमः। ❐

(लेखक श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा दिल्ली के अध्यक्ष हैं)

आध्यात्मिक एकता

1934 में वर्धा में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का एक शिविर हुआ, जिसमें लगभग 1500 स्वयंसेवक आए थे। सभी के लिए रहने की व्यवस्था बैरक और तंबू में की गई थी। इस स्थान के बगल में ही गांधीजी का आश्रम था। 1500 स्वयंसेवकों के कार्यक्रमों की जीवंतता के कारण गांधीजी को इस शिविर में आने की बहुत इच्छा हुई। वर्धा जिला संघचालक, जो कभी जिला कांग्रेस कमेटी के सचिव थे, ने गांधीजी का स्वागत किया। गांधीजी आए और रहने और खाने की व्यवस्था का ध्यान रखा। फिर उन्होंने पूछा, 'इस बैठक में कितने हरिजन आए हैं?' संघचालक ने उत्तर दिया, 'मैं नहीं बता सकता, क्योंकि मैंने कभी इस बारे में पूछा ही नहीं।' गांधीजी ने कहा, 'तो आप बताइए और मुझे तुरंत बताइए।' संघचालक ने कहा, 'मैं नहीं बता सकता। हमारे अनुसार सभी प्रतिभागी केवल हिंदू हैं, और हमारे लिए यही एकमात्र आवश्यक जानकारी है।'

'तो क्या मुझे उनसे सीधे पूछना चाहिए?' गांधीजी ने कहा 'आप ही तय करें।' संघचालक ने कहा। अंत में वास्तविकता का पता लगने पर गांधीजी को समझ में आया कि इस बैठक में हरिजन सहित सभी जातियों के लोग शामिल थे और वे सभी एक साथ रह रहे थे, खा रहे थे और खेल रहे थे। किसी को भी अपनी जाति का पता नहीं था। यह देखकर गांधीजी को आश्चर्य हुआ। डॉ. हेडगेवार जी और गांधीजी के बीच अगली बैठक में डॉ. हेडगेवार जी ने उनसे कहा, 'हमारी कार्यपद्धति ऐसी है कि हम आध्यात्मिक एकता को महत्व देते हैं और हम सतही मतभेदों की परवाह नहीं करते, और यही एक संगठन के रूप में संघ की सफलता का कारण है। ऐसा लगता है कि इस अनुभव ने 1947 में दिल्ली में सफाईकर्मियों से बात करते समय गांधीजी के मन पर गहरी छाप छोड़ी, उन्होंने इस घटना का जिक्र किया और कहा, 'जब मैंने स्वयंसेवकों का अनुशासन, भेदभाव रहित और सादा जीवन देखा तो मैं बहुत प्रभावित हुआ।'

संघ की सफलता का रहस्य संघ के कार्यकर्ताओं की वह प्रवृत्ति है जिसे उन्होंने अपने दिलों में विकसित कर लिया है और उनका मानना है कि उन्हें केवल हिंदू लोगों की चिंता है, उनकी जाति, पंथ या संप्रदाय की नहीं। उनका इससे कोई लेना-देना नहीं है। ❐

बरसत मेघ

■ **सरोजिनी चौधरी**

धरती लागत अधिक सुहावन
बरसत घुमड़-घुमड़ के मेघ।

दामिनी दमकत चमचम चमकत
पवन मचावे शोर
पीहू-पीहू रटत पपीहा
प्रियतम आन मिलो चितचोर।

रज सुगंध मनभावन महकत
हरसिंगार झरे फूल
पावन हुई धरा झलमल सी
दुख संताप गये सब भूल।

भारी कौतूहल भरमाये
पकड़े इंद्रधनुष की डोर
पिया मिलन की आस लगाये
नाचे मगन ये मन का मोर।

भौंरे गुन-गुन पढ़ते पाती
मुझको याद पिया की आती
घूम-घूम खग गाते हिलमिल
सब मिल बहुत मचाते शोर। ❐

सेवा के 60 साल

■ विनोद बंसल

देश की राजनैतिक स्वतंत्रता के पश्चात् कथित सेकुलरवाद के नाम पर हिन्दू समाज पर बढ़ते अन्याय तथा ईसाइयों व मुसलमानों के तुष्टिकरण के बीच 1957 में आई नियोगी कमीशन रिपोर्ट आई। इसमें ईसाई मिशनरियों द्वारा छल, कपट, लोभ, लालच व धोखे से पूरे देश में हिंदुओं के धर्मांतरण की सच्चाई सामने आने के बावजूद, तत्कालीन केंद्र सरकार द्वारा धर्मांतरण के विरुद्ध केंद्रीय कानून बनाने से स्पष्ट मना कर दिया गया। उधर विदेशों में रहने वाला हिन्दू समाज भी अपनी विविध समस्याओं के समाधान हेतु भारत की ओर ताक तो रहा था किन्तु, उसके प्रति भी केंद्र सरकार के उदासीन रवैए ने निराश ही किया। ऐसे में हिन्दू समाज को संगठित कर धर्म रक्षा करने तथा हिन्दू धार्मिक, सामाजिक व सांस्कृतिक जीवन मूल्यों की रक्षा हेतु, साठ वर्ष पूर्व, जन्माष्टमी (अंग्रेजी दिनांक अनुसार 29 अगस्त, 1964) को विश्व हिन्दू परिषद की स्थापना हुई।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक और हिदुस्तान समाचार के संस्थापक श्री दादासाहेब आप्टे जी के साथ, श्री कृष्ण जन्माष्टमी के पावन अवसर पर, पवई, मुम्बई स्थित पूज्य स्वामी चिन्मयानन्द जी के आश्रम सांदीपनि साधनालय में पूज्य स्वामी चिनमयानन्द, राष्ट्रसंत तुकडो जी महाराज, सिख सम्प्रदाय से माननीय मास्टर तारा सिंह, जैन सम्प्रदाय से पूज्य सुशील मुनि, गीता प्रेस गोरखपुर से हनुमान प्रसाद पोद्दार, के एम मुंशी तथा पूज्य श्री गुरुजी सहित 40-45 अन्य महानुभाव भी उपस्थित थे। इसी बैठक में 1. हिन्दू समाज को संगठित और जागृत करने, 2. उसके स्वत्वों, मानबिन्दुओं तथा जीवन मूल्यों की रक्षा और संवर्धन करने तथा; 3. विदेशस्थ हिंदुओं से संपर्क स्थापित कर उन्हें सुदृढ़ बनाने व उनकी सहायता करने सम्बन्धी विश्व हिंदू परिषद के तीन मुख्य उद्देश्य तय किए गए।

हिन्दू की परिभाषा करते हुए कहा गया कि "जो व्यक्ति भारत में विकसित हुए जीवन मूल्यों में आस्था रखता है या जो व्यक्ति स्वयं को हिन्दू कहता है वह हिन्दू है।"

22 से 24 जनवरी, 1966 को कुम्भ के अवसर पर 12 देशों के 25 हजार प्रतिनिधियों की सहभागिता के

साथ प्रथम विश्व हिंदू सम्मेलन प्रयाग में सम्पन्न हुआ। इसमें 300 प्रमुख संतों के साथ पहली बार प्रमुख शंकराचार्य भी एक साथ आए और धर्मांतरण पर रोक व परावर्तन (घरवापसी) का संकल्प लिया गया। मैसूर के महाराज माननीय चामराज जी वाडियार को प्रथम अध्यक्ष व दादासाहब आप्टे को पहले महामंत्री के रूप में घोषित कर विहिप की प्रबंध समिति की घोषणा भी हुई। इस सम्मेलन में जहां परावर्तन को मान्यता देने का ऐतिहासिक प्रस्ताव पारित हुआ वहीं विहिप के बोध वाक्य "धर्मो रक्षति रक्षित:" और बोध चिह्न "अक्षय वटवृक्ष" भी तय हुआ।

बाबा साहिब डॉ भीमराव अम्बेडकर का मत था कि यदि देश के संत महात्मा मिलकर यह घोषित कर दें कि हिन्दू धर्म-शास्त्रों में छुआछूत का कोई स्थान नहीं है तो इस अभिशाप को समाप्त किया जा सकता है। इसी को ध्यान में रखते हुए 13-14 दिसम्बर, 1969 की

विहिप की स्थापना के अवसर पर बाएं से स्वामी चिन्मयानंद जी, श्री गुरुजी

उडुपी धर्म संसद में संघ के तत्कालीन सर-संघचालक श्रीगुरुजी के विशेष प्रयासों के परिणामस्वरूप, भारत के प्रमुख संतों ने एकस्वर से "हिन्दवः सोदरा सर्वे, ना हिन्दू पतितो भवेत्" के उद्घोष के साथ सामाजिक समरसता का ऐतिहासिक प्रस्ताव पारित किया।

1994 में काशी में हुई धर्म संसद का निमंत्रण डोम राजा को देने पूज्य संत ना सिर्फ स्वयं चलकर गए, बल्कि उनके घर का प्रसाद ग्रहण किया तथा अगले दिन डोम राजा धर्म संसद के अधिवेशन में संतों के मध्य बैठे और संतों ने उन्हें पुष्प हार पहनाकर स्वागत किया। इस धर्म संसद में 3500 संत उपस्थित थे। वनवासी, जनजाति, अति पिछड़ी व पिछड़ी जाति के हजारों लोगों को ग्राम पुजारी के रूप में प्रशिक्षण देकर उनका समय-समय पर अभिनन्दन व मंदिरों में पुरोहित के रूप में नियुक्ति, विहिप के ग्राम पुजारी प्रशिक्षण अभियान के कारण ही संभव हुई।

9 नवम्बर, 1989 को श्रीराम जन्मभूमि का शिलान्यास एक अनुसूचित जाति के कार्यकर्ता कामेश्वर चौपाल द्वारा कराए जाने के अतिरिक्त, देशभर में आयोजित समरसता यज्ञ, समरसता यात्राएं, समरसता गोष्ठियां, हिन्दू परिवार मित्र योजना, अनुसूचित जाति व जनजातियों के लिए छात्रावास इत्यादि अनेक योजनाओं व कार्यक्रमों के माध्यम से हिन्दू समाज के बीच व्याप्त छूआछूत के अभिशाप से मुक्ति हेतु अभूतपूर्व कार्य किए हैं। सन् 2003 से लगातार देशभर में भगवान वाल्मीकि, संत रविदास तथा संविधान निर्माता डॉ भीमराव अम्बेडकर इत्यादि महापुरुषों, जिन्होंने देश की समरसता में योगदान दिया, की जयन्तियां व्यापक रूप से मनाई जा रही हैं। इन सब कार्यक्रमों के परिणामस्वरूप अब संत समाज सहज रूप से वंचित बस्तियों में प्रवास, प्रवचन व सह-भोज सहजता से करते हैं।

विश्व हिंदू परिषद द्वारा समाज के सहयोग से देशभर में 45 सौ से अधिक सेवा प्रकल्प भी चलाए जा रहे हैं। इनमें 31 प्रांतों के 93 हजार स्थानों पर 840 संस्कारशालाओं में 17 हजार बच्चे पढ़ रहे हैं। इनके अतिरिक्त प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, स्वावलंबन केंद्र, आवासी छात्रावास, अनाथालय, चिकित्सा केंद्र, कम्प्यूटर, सिलाई, कढ़ाई प्रशिक्षण केंद्र, विवाह केंद्र इत्यादि प्रमुख हैं।

द्वितीय विश्व हिंदू सम्मेलन भी प्रयाग की पावन धरा पर 27 से 29 जनवरी, 1979 को 18 देशों के 60 हजार प्रतिनिधियों की सहभागिता से सम्पन्न हुआ। इसका उद्घाटन पूज्य दलाई लामा जी ने किया तथा उनका स्वागत ज्योतिष्पीठ के शंकराचार्य जी ने किया। यह भी एक ऐतिहासिक प्रसंग था।

देश के वनवासी, गिरिवासी व नगरवासियों के कुम्भ के रूप में असम के जोरहाट में 27 से 29 मार्च, 1970 को देश की सभी प्रमुख तीर्थों व 45 नदियों के जल से एकात्म हुए इस सम्मेलन में अनेक पूज्य संत-महात्माओं व पूर्वोत्तर के विचारकों के साथ नागा रानी गाइदिन्ल्यू ने यह घोषणा की कि प्रकृति पूजक वनवासी समाज जिसे ईसाई मिशनरियां अपने चंगुल में फंसा रही हैं, हिन्दू समाज का ही अभिन्न अंग है।

1982 में श्री अशोक सिंघल विश्व हिन्दू परिषद के पदाधिकारी बने। व्यापक जन जागरण के कार्यक्रम होने लगे। 1983 में हुई एकात्मता यात्रा में तो देश के 6 करोड़ लोगों ने सहभाग किया। अप्रैल, 1984 में नई दिल्ली में प्रथम धर्म संसद का अधिवेशन संपन्न हुआ।

विश्व हिंदू परिषद द्वारा समाज के सहयोग से देशभर में 45 सौ से अधिक सेवा प्रकल्प भी चलाए जा रहे हैं। इनमें 31 प्रांतों के 93 हजार स्थानों पर 840 संस्कारशालाओं में 17 हजार बच्चे पढ़ रहे हैं। इनके अतिरिक्त प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, स्वावलंबन केंद्र, आवासी छात्रावास, अनाथालय, चिकित्सा केंद्र, कम्प्यूटर, सिलाई, कढ़ाई प्रशिक्षण केंद्र, विवाह केंद्र इत्यादि प्रमुख हैं।

गोरक्षा, गोपालन व गोसंवर्धन के क्षेत्र में विश्व हिन्दू परिषद् ने अनेक कार्य किए हैं। देश में 60 स्थानों पर गोवंश की देशी नस्लों का संवर्धन, 40 स्थानों पर पंचगव्य आधारित औषधि निर्माण केंद्र तथा तीन पंचगव्य अनुसंधान केंद्र इस समय कार्यरत हैं। 25 लाख गोवंश की कसाइयों से मुक्ति, अनेक राज्यों में गोवंश हत्या के विरुद्ध कठोर कानून की व्यवस्था और गोपालन से स्वावलंबन की ओर योजना के अन्तर्गत पांच गायों से 50 हजार मासिक की कमाई तथा गोवंश आधारित ऋण-मुक्त, कृषि व रोजगार-युक्त युवक की दिशा में विहिप ने महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। अनेक राज्यों में गोरक्षा हेतु कठोर कानून भी बनवाए हैं।

विहिप ने अवैध धर्मांतरण पर रोक

तथा धर्मान्तरित हिन्दू भाई-बहिनों को अपनी जड़ों से पुनः जोड़ने की दिशा में भी बड़ा कार्य किया है। अभी तक लगभग 40 लाख हिन्दुओं के धर्मांतरण को रोकने के साथ-साथ लगभग 9 लाख की घरवापसी भी हुई है। अनुसूचित जाति, जनजाति, वनवासी व गिरिवासी समाज के बीच सेवा, समर्पण व स्वावलंबन के मंत्र के साथ अनेक राज्यों में छल-बलपूर्वक धर्मान्तरण के विरुद्ध कठोर दण्ड की व्यवस्था वाले कानून विहिप के सतत प्रयासों के कारण ही बन पाए हैं। 8 हजार बहिनों को लव जिहाद के षडयन्त्र से बचाया।

भारत धर्मयात्राओं का देश है जिसकी आत्मा तीर्थों में वास करती है। इन यात्राओं के माध्यम से ही देश, धर्म व समाज की एकता, अखण्डता और समरसता प्रतिबिम्बित होती है। बात चाहे कांवड़ यात्रा की हो या कैलाश मानसरोवर की, अमरनाथ यात्रा हो या गोवर्धन परिक्रमा, जगन्नाथ की नव कलेवर यात्रा हो या सिन्धु यात्रा, श्रीराम जानकी विवाह बारात यात्रा हो या बाबा अमरनाथ की यात्रा, इन सभी को सस्ती, सफल, सुखद, संस्कारित व आध्यात्मिक स्वरूप देने में विश्व हिन्दू परिषद् के धर्म यात्रा महासंघ ने वर्ष 1995 से एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। शासन-प्रशासन व सम्बन्धित सरकारों के साथ अनवरत संपर्क के माध्यम से इन्हें व्यवस्थित भी किया गया है। अनेक मृत प्रायः यात्राओं को पुनर्जीवित भी किया।

'वसुधैव कुटुम्बकम्' की अवधारणा को लेकर विदेशों में बसे हिन्दू समाज की सुरक्षा, संस्कार व उनके अन्दर हिन्दू जीवन मूल्यों को जीवंत रखने हेतु विहिप ने अनेक कदम उठाए हैं। विश्व के किसी भी भूभाग पर रहने वाले हिन्दू की आवाज के रूप में विहिप कार्यकर्ता सदैव अग्रणी रहे हैं। इसी कारण विहिप ने अमेरिका, इंग्लैंड, आस्ट्रेलिया, कनाडा, फिजी, न्यूजीलैंड, डेनमार्क, थाईलैंड, इंडोनेशिया, ताईवान, श्रीलंका, नीदरलैंड, सिंगापुर, नेपाल, जर्मनी इत्यादि देशों में अनेक स्थानीय व वैश्विक स्तर के सम्मेलनों का आयोजन सफलतापूर्वक किया तथा इनमें से अधिकाँश देशों में हिन्दू त्योहारों, परम्पराओं को धूमधाम से मनाया जाता है।

अपने 60 वर्ष की विकास यात्रा में विहिप ने अनेक जन जागरण अभियान चलाए जो वैश्विक कीर्तिमान बन गए। 1984 में प्रारम्भ हुए श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति आन्दोलन ने देश के लाखों गाँवों के 65 करोड़ लोगों को जोड़ा। सड़क से संसद व सर्वोच्च न्यायालय तक अपनी आवाज बुलंद कर 496 वर्ष के संघर्ष के उपरांत, देश के स्वाभिमान का पुनरजागरण करते हुए, 22 जनवरी 2024 को अयोध्या में रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा ने इस ऐतिहासिक दिवस को स्वर्णाक्षरों में दर्ज करा दिया।

1995 में जब आतंकियों ने बाबा अमरनाथ की यात्रा को बंद करने की ध मकी देते हुए यह कहा कि यदि कोई आएगा तो वापस नहीं जाएगा। बजरंग दल के आह्वान पर 51 हजार बजरंगी व एक लाख अन्य शिवभक्तों ने जय भोले की हुंकार भरते हुए उस दुर्गम यात्रा की ओर जब कूच किया तो उस यात्रा को रोकने का कोई आज तक दुस्साहस नहीं कर पाया। पूंछ जिले के सीमांत क्षेत्र को हिन्दू-विहीन करने के जिहादी षड्यंत्र को भांपते हुए बजरंग दल ने 2005 में बाबा बूढ़ा अमरनाथ की यात्रा को जब पुनः प्रारम्भ कराया तो वहां से हिन्दुओं का पलायन भी रुका और समाज व सुरक्षाकर्मियों का आत्मविश्वास भी बढ़ा। इनके अलावा मेवात में नलहड़ महादेव यात्रा, कर्नाटक में दत्ता पीठ यात्रा तथा अयोध्या से जनकपुर तक जाने वाली श्री राम-जानकी बारात यात्रा भी सामाजिक समरसता व एकात्मता का भाव जागृत कर रही हैं।

भगवान श्रीराम के आदेश पर नल व नील द्वारा दक्षिण में बनाए गए रामसेतु को तत्कालीन सरकार के हमले से बचाने हेतु भी विहिप ने एक बड़ा जन आन्दोलन खड़ा किया था। जब तत्कालीन केंद्र सरकार ने सर्वोच्च न्यायालय में श्री राम के अस्तित्व को ही नकार दिया तो विहिप के मात्र चार घंटे के सफल देशव्यापी चक्का जाम ने सरकार को उसी दिन झुकने को मजबूर कर दिया। दिल्ली के स्वर्ण जयंती पार्क में उपस्थित लाखों रामभक्तों के सैलाब के आगे सरकारी जिद धरी रह गई। विहिप की युवा शाखा बजरंग दल तथा दुर्गा वाहिनी ने 1984 से लेकर आज तक देश-धर्म संस्कृति व राष्ट्र की रक्षार्थ सदैव अग्रणी भूमिका निभाई है। सेवा, सुरक्षा व संस्कार इनके मूल मंत्र रहे हैं। संस्कृत भाषा, वेद पाठशाला तथा संस्कारों की अभिवृद्धि हेतु भी विहिप ने अनेक कदम उठाए हैं।

इतने सब के बावजूद हमारे समक्ष ध र्मांतरण, लव जिहाद, सामाजिक समरसता, धर्मस्थलों को सुरक्षा व सरकारी अधिग्रहण से मुक्ति, संस्कृति व संस्कारों का क्षरण, धार्मिक शिक्षा व जागरूकता का अभाव, विदेशी घुसपैठ, जनसंख्या असंतुलन जैसी अनेक चुनौतियाँ सामने खड़ी हैं जिनका मुकाबला करते हुए हिन्दू समाज को इनसे मुक्ति दिलानी है। ❐

(लेखक विश्व हिंदू परिषद के राष्ट्रीय प्रवक्ता हैं)

भगवान को याद करते रहिये

■ हेमन्त शर्मा

कृष्ण के पास होते हुए भी युधिष्ठिर, दुर्योधन और द्रौपदी तीनों ही उनका लाभ लेने से चूक गए। दुर्योधन को तो कृष्ण ने दो बार कुछ लेने का अवसर दिया, परंतु धनशक्ति और अभिमान के चलते वे लाभ लेने से चूक गए। युधिष्ठिर सबसे बड़े होते हुए भी कृष्ण का लाभ न ले पाए। उल्टे कृष्ण से कह दिया कि वे द्यूत क्रीड़ा में भाग न लें और कक्ष से बाहर ही रहें। जब दुशासन रजस्वला द्रौपदी को केश पकड़कर द्यूत क्रीड़ा भवन में घसीटकर ले जा रहा था, जब भरी सभा में उन्हें निर्वस्त्र कराने का आदेश दे रहा था तब भी उन्होंने कृष्ण को याद नहीं किया। याद तब किया जब उनकी साड़ी खींची जाने लगी। बस कृष्ण आ गए और लाज बच गई। कृष्ण आते हैं पर उन्हें याद करना पड़ता है। युधिष्ठिर जब एक के बाद एक सब कुछ हारे जा रहे थे, तब भी उन्होंने कृष्ण को याद नहीं किया। करते तो कृष्ण पासे पलट देते। दुर्योधन चतुर था। वह पासे फेंकने में कमजोर था। उसने पहले ही घोषणा कर दी कि उसकी ओर से चतुर मामा शकुनि पासे फेंकेंगे। युधिष्ठिर को तब भी कृष्ण की याद नहीं आई। अन्यथा वे भी कृष्ण से पासे खिलवाते तो द्यूत क्रीड़ा का इतिहास दूसरा होता। युधिष्ठिर चूक गए और कृष्ण के साथ होते हुए भी सब हार गए। कृष्ण की याद जिसे समय पर आ गई, वह अर्जुन था। युद्ध के बीच चारों तरफ अपनों को देखकर जब वह हताश हो गया, तब कृष्ण उसके साथ ही थे। उसने गांडीव रख दिया और खुद का समर्पण कृष्ण के सम्मुख कर दिया। बस फिर क्या था। माधव ने लंबी पराजय का इतिहास ही बदल दिया।

सच है मुरली बजैया को समय पर याद करना पड़ता है। उन्हें याद करने वालों में विदुर भी थे और भीष्म भी। धृतराष्ट्र पुत्र मोह में चूक गए और तमाम कौरव भी। परिणाम देखिए, कुंती के पांचों पुत्र जीवित रहे, गांधारी का सारा कुल नष्ट हो गया। कृष्ण विमुख होकर न कृपाचार्य बचे और न द्रोण। कृष्ण साथ न हो तो भी कोई बात नहीं। उन्हें आदत है बस वे पुकार पर चले आते हैं। महाभारत काल में कृष्ण साक्षात थे, परंतु उस समय के लोग चूक गए। सुदामा साथी थे, वे भी चूक गए। पर सुदामा की पत्नी सुशीला ना चूकी, उसने किस्मत बदल दी।

रामावतार में विद्वान रावण जानते थे कि राम के आने का उद्देश्य क्या है। कृष्णावतार में कंस अभागे थे, सगा भांजा कौन हैं, जान ही न पाए। कृष्ण को जानना और पहचानना जरूरी है। "जिन खोजा तिन पाईयां गहरे पानी पैठ"। कोई कृष्ण नहीं हो सकता, केवल कृष्ण को जान सकता है। कृष्ण आज भी हमारे आसपास हैं। उन पर भरोसा हो तो उन्हें पाना भी संभव है। कितनी अबलाएं आधुनिक असुरों का ग्रास बन रही हैं। क्या करें, कान्हा को कोई पुकारती ही नहीं। अपने पास पाएंगे, जरा पुकारिए तो सही ? याद रहे, बड़े छलिया हैं मेरे कन्हैया, बिना पुकारे आते नहीं हैं। ❐

धरती लागत अधिक सुहावन

गुरु की महिमा

■ विनीशा

गुरु हमें उठाता है,
नींद से हमें जगाता है।

अंधेरे में हम बैठे हों अगर,
हमें रोशनी की राह दिखलाता है।

काँटे बिछ जाएँ हर तरफ अगर,
उन पर चलना सिखलाता है ।

दुश्मन सी लगे जब सारी दुनिया,
ये प्रेम का सबक बताता है।

लगता है जब सब हार गए हम,
एक नया नजरिया दिखलाता है।

कदम लगें अगर डगमगाने,
ये हाथ थाम कर चलाता है।

ये गुरु मेरा निराला है,
जिंदगी जीना सिखलाता है। ❐

मरीजों के लिए वरदान है डायलिसिस केंद्र

सेवा भारती स्वास्थ्य संबंधी अनेक प्रकल्प चलाती आई है और उसी कड़ी में अशोक विहार में एक डायलिसिस केंद्र चलाया जा रहा है। यह केंद्र उन लोगों के लिए वरदान से कम नहीं है, जो किडनी की बीमारी से ग्रस्त हैं। बता दें कि किडनी खराब होने पर मरीजों को सप्ताह में 2 बार डायलिसिस की आवश्यकता होती है। कुछ मरीजों को 2 से अधिक बार भी इस प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है। सामान्यत: एक बार के डायलिसिस में 3500-5000 रुपये तक का खर्च आता है। ऐसे लाखों लोग हैं, जो इतना खर्च नहीं कर पाते हैं। ऐसे में इन मरीजों की हालत बुहत ही खराब हो जाती है। सामान्यत: देखा-सुना गया है कि निम्न आयवर्गीय परिवार अपनी सारी जमा पूंजी व्यय कर भी मरीज का इलाज नहीं करवा पाते। उनके दुख को थोड़ा सहज करने के उद्देश्य से सेवा भारती दिल्ली ने डायलिसिस केन्द्र की शुरुआत की है। माननीय वी. के. बढ़ेरा जी ने इस पुण्य कार्य के लिए भूमि दान दी और रोटरी क्लब के साथ-साथ अन्य गणमान्य दानदाताओं ने डायलिसिस संबंधी सारी सुविधाएं उपलब्ध कराई।

रोटरी हेरिटेज डायलिसिस केन्द्र में 17 बेड की सुविधा है। यहां दो डॉक्टर मरीजों का डायलिसिस करते हैं। एक डॉक्टर पूरे समय यानी सुबह से शाम तक कार्यरत रहते हैं और एक डॉक्टर पार्ट-टाइम कार्य करते हैं। दोनों ही डॉक्टर महाराजा अग्रसेन अस्पताल से हैं व अपने कार्य में निपुण हैं। आश्चर्य करने वाला विषय है कि मात्र 900 रुपये में एक बार डायलिसिस यहां होता है जो कि अन्य जगहों के अनुपात में बेहद कम शुल्क है। यहां आने वाले मरीज सामान्यत: सप्ताह में दो से तीन बार आते हैं। उनके रिश्तेदार या परिवारजन भी साथ होते हैं। हम मरीज का तो सोचते हैं परन्तु उसके साथ जो व्यक्ति मेहनत कर रहा है, उसको नजरअंदाज कर देते हैं। इस केन्द्र में रिश्तेदार/परिवार जन के लिए वातानुकूलित आरामदेह कक्ष है, जहां टी.वी., सोफे, पानी इत्यादि सारी भौतिक सुविधाएं उपलब्ध हैं। मरीजों के लिए चाय और ब्रेड की भी व्यवस्था है।

प्रत्येक वर्ष लगभग 10,000 मरीज डायलिसिस का लाभ उठाते हैं। समाज के सहयोग से सेवा भारती इन मरीजों की सहायता कर रही है परन्तु गुणवत्ता से कोई समझौता नहीं किया जाता। विश्व की सबसे नवीनतम तकनीक एवं सबसे महंगी मशीनों की सहायता से डायलिसिस किया जाता है। केंद्र की देखरेख में संलग्न एक कार्यकर्ता ने बताया कि आने वाले समय में मरीजों के साथ आए परिवारजनों को भी भोजन दें तो और संतुष्टि प्राप्त होगी। यहां से जाने के बाद मरीजों के चेहरे पर दु:ख के बादल तो होते हैं, पर कार्यकर्ताओं के स्नेह, डॉक्टरों के मधुर वचन सुनने के बाद सभी मरीज आशावान हो जाते हैं और नवीन ऊर्जा से भरे दिखाई देते हैं। केन्द्र के पास एम्बुलेन्स सुविधा भी है।

अगर कोई मरीज अधिक खराब स्थिति में है तो उसको घर पहुंचाया जा सकता है या किसी अन्य अस्पताल में भेजा जा सकता है। सुबह 8 बजे से सायं 8 बजे तक केन्द्र की और मरीजों की देखरेख करने वाले एक कार्यकर्ता ने बताया कि हमारा कोई विज्ञापन तंत्र नहीं है, हमारा कार्य मरीजों का स्वस्थ होना ही हमारा विज्ञापन तंत्र है। हमारा लक्ष्य है कि अधिक से अधिक मरीजों को लाभ पहुंचे। ❐

दो जिंदगियों को रोशन कर गईं मोनिका सिंघल

कहते हैं कि मरने के बाद कुछ ही लोग जिंदा रहते हैं। कुछ ऐसी ही कहानी मोनिका की है। मुरादाबाद की रहने वाली मोनिका बेशक अब इस दुनिया में नहीं है लेकिन वह दो लोगों की जिंदगी को उजाला कर गई हैं। अब ये दो लोग मोनिका की आंखों से दुनिया देख सकेंगे। स्वतंत्रता दिवस के दिन बृहस्पतिवार को वैशाली स्थित मैक्स हास्पिटल में सर्विकल कैंसर के चलते मुरादाबाद के रहने वाले होम्योपैथिक चिकित्सक रोहित मित्तल की 46 वर्षीय पत्नी मोनिका सिंघल की मौत हो गई। मोनिका ने जिंदा रहते हुए पति से इच्छा जाहिर की थी कि मेरे मरने के बाद आंख जरूर दान कर देना। आंखों में पत्नी के जाने के आंसू लेकर भी रोहित ने पत्नी की इच्छा पूरा करने के लिए मुरादाबाद स्थित सीएल गुप्ता आई बैंक के स्वामी गुरविंदर सिंह को फोन किया कि वह अपनी टीम लेकर तुरंत मैक्स

हास्पिटल आ जाएं। गुरविंदर सिंह ने देर शाम को अस्पताल पहुंचकर टीम में शामिल टेक्नीशियन दीपक सीनियर और दीपक जूनियर की देखरेख में कार्निया सुरक्षित निकालकर आई बैंक को भेज दिया है। इसके साथ ही मोनिका मरकर भी दो लोगों की जिंदगी रोशन कर गई। रोहित का कहना है कि मोनिका की आंख से दो लोग दुनिया देखेंगे तो उन्हें यह एहसास रहेगा कि मोनिका आज भी जिंदा है। बता दें कि केंद्र सरकार द्वारा संचालित किए जा रहे राष्ट्रीय नेत्र ज्योति अभियान के तहत बहुत कम लोग आंख दान कर रहे हैं।

रिपोर्ट के अनुसार कि उत्तर प्रदेश में पंजीकृत 75 नेत्र बैंकों के सापेक्ष केवल 11 नेत्र बैंकों ने शासन को दान में मिले कार्निया के प्रत्यारोपण की रिपोर्ट शासन को भेजी है। 64 ने कोई रिपोर्ट नहीं भेजी है। 11 की रिपोर्ट के अनुसार भी बहुत कम लोग आंख दान करने को आगे आ रहे हैं। गाजियाबाद में तो कोई नेत्र बैंक ही नहीं है। एक साल में उत्तर प्रदेश में 1500 के लक्ष्य के सापेक्ष 1,406 कार्निया दान में मिले और 1,066 का सफल प्रत्यारोपण करते हुए लोगों की जिंदगी में उजाला हुआ है। खास बात यह है कि मोनिका की आंख समय पर लेने वाले सीएल गुप्ता आई इंस्टीट्यूट मुरादाबाद का प्रदेश में प्रथम स्थान है। ❐

(साभार, दैनिक जागरण)

कृष्ण कन्हैया, मुरली बजैया

सेवा भारती जिला मुखर्जी नगर स्थित सीएससी बालवाड़ी बालासाहब देवरस केन्द्र पर जन्माष्टमी मनाई गई। इस अवसर पर छोटे-छोटे बच्चे कन्हैया बने और कई सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी।

आलोचना सुनने के लिए बड़ा दिल चाहिए

■ गंगा प्रसाद सुमन

किसी भी क्रिया की प्रतिक्रिया का होना स्वाभाविक है। पक्ष-विपक्ष, श्वेत-श्याम, कृष्ण-शुक्ल पक्ष दोनों ही इस जगत में विद्यमान रहते हैं। विचारों की स्वतंत्र अभिव्यक्ति हमारे लोकतंत्र की अनुपम देन है। समाज सेवा के पथ पर चलना तलवार की धार पर चलने के समान है। जितना भी महान उद्देश्य होगा, उतना ही उसके विरोध और आलोचक होंगे। लेकिन सच्चा साधक तो निंदा व स्तुति सुनकर अपने मार्ग से कभी विचलित नहीं होता, वह तो धैर्य धारण करता हुआ अपनी साधना के पथ पर सतत प्रगमन करता रहता है। धैर्य, साहस और उच्च मनोबल उसके सच्चे साथी होते हैं। प्रतिकूल धाराओं में ही तो धैर्य की परीक्षा होती है। तेरे फूलों से भी प्यार, तेरे कांटों से भी प्यार।

स्वामी दयानन्द निंदा का अर्थ करते हुए लिखते हैं, ''जो मिथ्या ज्ञान, मिथ्या भाषण, झूठ में आग्रहादि क्रिया का नाम है कि जिससे गुण छोड़कर उनके स्थान में अवगुण लगाना होता है वह निन्दा कहलाती है।'' निंदक लोग दूसरों की लज्जा और विनयशीलता को उसकी मूर्खता समझ लेते हैं। पराए गुणों में दोष निकाल ही लेते हैं। स्तुति का अर्थ बताते हुए स्वामी जी लिखते हैं, ''किसी दूसरे पदार्थ का गुणगान, कथन, श्रवण और सत्यभाषण करना, स्तुति कहाती है।'' जैसे को तैसा ही समझ लेना भावना कहलाती है। मनुष्य ही ऐसा जीव है जो चिन्तन, मनन, ध्यान, धारणा आदि कर सकता है, अन्य

जो स्वयं को हर विषम परिस्थितियों में ढाल लेता है उसे जीवन में जीने की कला आ जाती है। उदय के समय सूर्य ताम्रवर्ण का और अस्त के समय भी ताम्रवर्ण का होता है। निंदा-स्तुति, मान-अपमान, आलोचना-समालोचना में एकरूपता व समभाव का धैर्य होना चाहिए।

जीव नहीं। किसी वस्तु के सम्बन्ध में गुण-दोष का विचार या निरूपण करना आलोचना कहलाता है। समालोचना का अर्थ करते हुए डिजरायली लिखते हैं, ''अच्छी समालोचना वह है जिसमें समालोचक लेखक का बैरी न होकर प्रतिद्वन्द्वी बने।''

खरी-खरी भी वहीं सुना सकता है जिसकी स्वस्थ आलोचना में आत्मीयता का गुण समाहित हो और लाल निशान भी वहीं लगा सकता है जिसका स्वयं का चरित्र धवल हो और नैतिकता में बल हो तथा आत्मा बलवान हो और जिसका मन समरसता की धार बहाता रहता हो ।

जो लोग आपकी आलोचना कर रहे हैं, उनकी बातों का विरोध एक साथ उस समय न करें, विनम्रभाव से सुनें। ऐसा प्रकट करें मानो उनसे आप सहमत हैं। फिर उनके पास कुछ कहने के लिए शब्द ही नही रहेंगे। उनकी समझ में नहीं आ सकेगा कि अब आगे और क्या कहा जाए?

स्वस्थ आलोचना का तो स्वागत होना भी चाहिए। सच्चा आलोचक तो हमें आत्म-निरीक्षण के लिए प्रेरित करता है। उसके प्रति तो हमारा कृतज्ञता का भाव होना चाहिए, वह हमारा सच्चा हितैषी है जो हमारी न्यूनता की ओर संकेत कर रहा है। आलोचक हमारा दर्पण है जो हमारी वास्तविक छवि का दिग्दर्शन करा रहा है। अनाज में से कंकड़ियों को बीन-बीन कर वह स्वच्छता प्रदान कर रहा है। 'बिन पानी साबनु बिना, निर्मल करें स्वभाव' समाज हित में जो आलोचनाओं का विषपान करता है वह नीलकंड शिव बन जाता है। आलोचना का स्वाद कैसा भी हो, परिणाम मीठा ही होता है।

आलोचना की आँच से सत्य की क्रांति दमकती है। मेंहदी पिस-पिस कर ही रंग लाती है। विरोध की आग पर स्नेह का शीतल जल डालने से ही विरोध का शमन होगा। विरोध का विरोध से नहीं ।

जो स्वयं को हर विषम परिस्थितियों में ढाल लेता है उसे जीवन में जीने की कला आ जाती है। उदय के समय सूर्य ताम्रवर्ण का और अस्त के समय भी ताम्रवर्ण का होता है। निंदा-स्तुति, मान-अपमान, आलोचना-समालोचना में एकरूपता व समभाव का धैर्य होना चाहिए। सहनशक्ति रखने से बिगड़े काम भी बन जाते हैं। ❐

लक्ष्मी पुनः लौटी!

■ प्रतिनिधि

प्राचीन समय की बात है उत्तर देश में धर्मदास नामक एक सेठ रहता था। उसने अपने पैतृक वाणिज्य-व्यवसाय से अकूत धन कमाया। यथा नाम तथा गुण के अनुसार सेठ धर्मदास में धर्म के प्रति भी अटूट श्रद्धा थी। वह दान, धर्म, तीर्थ, स्नान आदि में भी यथासम्भव लगा ही रहता था। वह मन में अति सन्तुष्ट था कि उसने जो कुछ कमाया है वह बहुत परिश्रम से और बहुत ईमानदारी से कमाया है। समाज में उसकी प्रतिष्ठा है और उसने कभी भी किसी गरीब को सता कर धन एकत्रित नहीं किया। मगर होनी ऐसी हुई कि एक दिन जब वह दुकान पर पहुंचा तो उसने पाया कि दुकान खाली पड़ी है, चोरों ने पूरा सामान और धन लूट लिया है। सेठ धर्मदास की हालत देखते ही बनती थी, वह हक्का-बक्का सा शून्य सा अर्धचेतन सा दुकान के सामने खड़ा था। सारा बाजार एकत्रित हो गया, अन्य दुकानदारों ने सेठ धर्मदास को धीरज बंधाया, बैठाया, पीने को पानी दिया। तरह-तरह की बातें रहीं-कोई राज्य की सुरक्षा-व्यवस्था को कोसता, कोई समाज में फैली अव्यवस्था को, मगर सेठ ध र्मदास के प्रति सभी को सहनुभूति थी, सभी उसकी सहायता को उत्सुक थे।

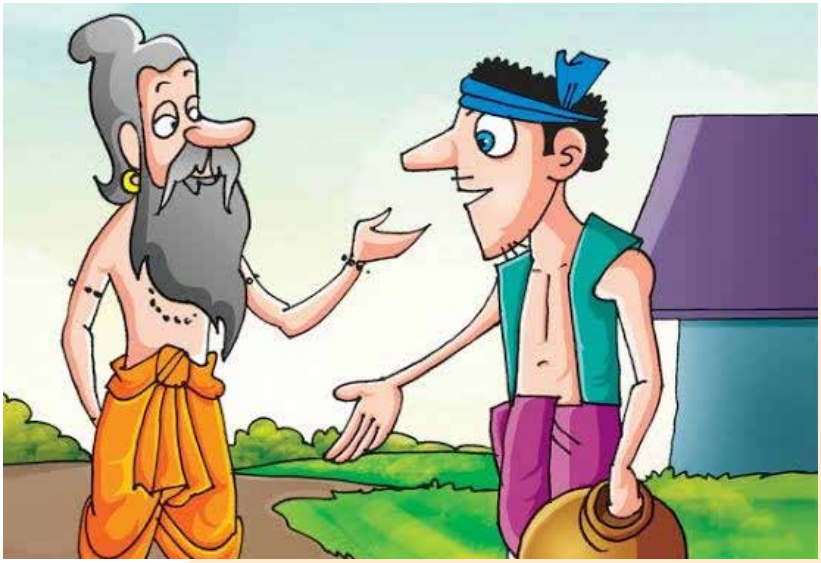

सेठ धर्मदास ने दूसरे दिन मन्दिर से एक पंडित जी को बुलवाया और पूछा- हे विप्रश्रेष्ठ! मैंने कौन पाप किये हैं कि मुझे दरिद्रता का यह दिन देखना पड़ रहा है! विद्वान ब्राह्मण ने कहा- सेठ जी पिछले जन्मों के कर्मफल भी हमें भोगने होते हैं। मैं पिछले जन्मों के विषय में तो कुछ नहीं कहूंगा, मगर इतना जरूर कहूंगा कि भगवान कभी-कभी ऐसी परिस्थितियां मनुष्य की परीक्षा के लिए भी पैदा कर देता है। दूसरे, यह भी जरूरी नहीं है कि मनुष्य को सभी कुछ अपने कर्मफल से ही मिले, समाज में जो अव्यवस्था है, जो गरीबी है, जो असन्तोष है उसका परिणाम भी व्यक्ति विशेष को भुगतना पड़ सकता है, इसीलिए हमारे धर्मग्रन्थ बार-बार कहते हैं कि सौभाग्यशाली व्यक्तियों को ऐसे कार्य करते रहना चाहिए जिससे समस्त समाज का उत्थान हो, प्राणी मात्र का कल्याण हो।

ब्राह्मण ने आगे कहा-आप धीरज धारण करें, एकाग्रचित होकर अपने कार्य व्यापार में फिर से लग जाएं। गीता के सोलहवें अध्याय का सोलहवां श्लोक कहता है कि अनेक चित्त विभ्रान्ता, मोह जाल समावृता: व्यक्ति कभी सफलता प्रान्त नहीं करता। अनेक चित्त विभ्रान्ता- अनेक प्रकार से भ्रमित चित्त वाले अज्ञानी मत बनो, मोह जाल समावृता: - मोह रूप जाल से निकलो । आपने कोई पाप नहीं किया है तो ईश्वर कृपा से आप इसी एक वर्ष में पुन: पहले के समान धनी-मानी व्यक्ति हो जाएंगे। हे सेठ धर्मदास जी! माया कभी स्थिर नहीं रहती है, इसलिए आज चली गई है तो उसका गम क्यों करें, कल पुन: वह आपके पस लौट भी आएगी। आप गीता के सोलहवें अध्याय का नित्य पाठ किया करें और उसके अनुरूप अपना जीवन बनाएं।

गीता के सोलहवें अध्याय का नाम है - देवासुर सम्पद् विभाग योग। दैवी सम्पद् क्या है और आसुरी सम्पद क्या है, इसको समझ कर दैवी सम्पद् को संग्रहीत करें। ❐

परमार्थ है जीवन का परम उद्देश्य

■ प्रो. संदीप गौड़

अज्ञान से जब नफरत और कुकृत्य बढ़ने लगे तब हमें अपने जीवन के उद्देश्य का मनन करना चाहिए। और ये जीवन के उद्देश्य कहीं और नहीं बल्कि हमारे मन मस्तिष्क के चिंतन की गहराई से प्राप्त हो सकते हैं। ऋषियों, महात्माओं और संतों ने तप, ध्यान और त्याग से व्यावहारिक जीवन के उद्देश्य जाने समझे। उनके अनुसार जीवन का सर्वोपरि या परम उद्देश्य परोपकार है।

यह उद्देश्य पूर्ण करने के बाद ही कोई कह सकता है कि उसने सफल जीवन जिया। सफल जीवन की कसौटी धन और सम्पत्ति नहीं है, ये तो केवल सहायक साधन मात्र है। हालांकि जीवन का कोई एक उद्देश्य नहीं होता। लेकिन जीवन अवसर है उद्देश्य तय करने का, स्वयं को जानने का, अपनी अंतर्निहित शक्ति और प्रतिभा को जानने और विकसित करने का। जीवन के असंख्य आयाम हैं, इन सभी आयामों में महत्ता विकसित होना और श्रेष्ठ और कल्याणकारी अस्तित्व और व्यक्तित्व का निर्माण करना ही जीवन का परम उद्देश्य है। इसलिए यदि आपने कोई उद्देश्य निर्धारित नहीं किया है तो जीवन निरर्थक है। और उद्देश्य भी स्वार्थपरक न होकर परमार्थपरक होना चाहिए, फिर उस उद्देश्य की पूर्ति के लिए जीवन देने वाले को असीम सुख मिलता है।

जीवन का रहस्य भोग में नहीं, बल्कि दूसरों के सहयोग में है। इसलिए आदमी को चाहिए कि परोपकारी जीवन बिताए न कि पापी। परोपकार करने वाले इस दुनिया में खुश रहते हैं। अत्याचार के विरोध के लिए ही मनुष्य का जीवन प्राप्त हुआ है।

सदैव ध्यान रखें कि हम ही जगत की आत्मा हैं, हम ही सूर्य, चन्द्र, तारे हैं, हम ही सर्वत्र चमक रहे हैं, समस्त जगत हम से ही है। फिर किससे घृणा करोगे और किससे झगड़ा करोगे इसलिए जान लो कि हम वहीं हैं और इसी के अनुरूप

अपना जीवन ढालो। ये करुणामय हृदय ईश्वर का मन्दिर है। अपना जीवन गुलाब की तरह बनाओ जो सुगन्ध की भाषा में शान्तिपूर्वक वातार्लाप करता है। सदा अपने मन को परहित और कल्याण में बिताएं तो आप हजारों परेशानियों से भी बच जाएंगे। जिसके जीने से बहुत से लोग जीवित हैं, वही इस संसार में जीता हुआ रहता है। परोपकर रहित जीवन, सिद्धान्त रहित जीवन है पतवार रहित नौका के समान है। जीवन संघर्ष में वही सफल होते हैं, जिन्होंने परमार्थ की शिक्षा प्राप्त की हो। जीवन के लिए खाना और सोना जरूरी है लेकिन जीवन पारमार्थिक कार्यों से सफल होता है। यही ध्यान रखें कि मनुष्य वही है जो दूसरों के लिए काम आए। अपने लिए तो सभी जीते हैं लेकिन जीवन उसका सफल है जो दूसरों की भलाई करें।

संसार में परोपकार ही वह गुण है जिससे मनुष्य के जीवन में सुख की अनुभूति होती है। समाज सेवा की भावना, प्रेम की भावना, दान की भावना, दुख में पीड़ित लोगों की सहायता करने की भावना यह सब कार्य परोपकार ही हैं। इसके विपरीत परपीड़ा अर्थात् दूसरों को कष्ट पहुंचाने से बढ़कर कोई नीचता का कार्य नहीं हो सकता। वहीं परहित नि:स्वार्थ होना चाहिए। जहां स्वार्थ का भाव आ गया, वहां परहित रहता ही नहीं।

यदि किसी की भलाई, बदले में कुछ लेकर की तो वह भलाई नहीं एक प्रकार का व्यापार है। परोपकार की भावना से मनुष्य के हृदय में सुख की अनुभूति होती है और उदारता की भावना पनपती है। इसके लगातार अभ्यास से किसी के प्रति द्व ेष तथा ईर्ष्या नहीं होती। परोपकारी मनुष्य न केवल अपने बारे में सोचता है बल्कि दूसरों के सुख-दुख का ध्यान भी रखता है। ईश्वर ने सभी प्राणियों में सबसे योग्य मनुष्य को बनाया है और परोपकार का गुण ही मनुष्य को पशु से अलग करता है और पूजनीय बनाता है। परोपकार का सबसे बड़ा लाभ है - आत्म संतुष्टि और आत्मिक शांति, और यही सुख का सार है। ❐

अपने बच्चों को सुसंस्कारी बनाएं

■ दुर्गाशंकर त्रिवेदी

बच्चे ही राष्ट्र के भविष्य हैं। कल का भारत उनका अपना है। उन्हें कल का राष्ट्रनायक जाति-सेवक और संस्कृति-रक्षक बनना है। अत: उन्हें सुसंस्कारी बनाना आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य है। आज इस राष्ट्रीय संपत्ति की सुरक्षा पर बहुत कम लोगों का ध्यान है। फलस्वरुप भरत और आरुणि जैसे बच्चों वाले देश में अनुशासनहीन, भिखमंगे, मादक द्रव्यसेवी और व्यभिचारी बालक नजर आ रहे हैं। पिता की आज्ञा पर 14 वर्ष वन की ठोकरें खाने वाली राम के ही वंशज आज हम पिता को उपेक्षा पूर्ण दृष्टि से देख रहे हैं। आरुणि के समान गुरु- आज्ञा पालक की ही संतति आज अध्यापकों को चंद चांदी के टुकड़ों का टुक्कड़खोर समझती है। यह बच्चों की गलती नहीं, उनमें डाले गए संस्कारों की, उनके अभिभावकों की और आज के विषादमय परिस्थिति की ही त्रुटि है।

जब हमारे यहां भारतीय संस्कृति के जनक - यज्ञ की साक्षी में षोड़श संस्कार संयुक्त संस्कार पद्धति से बच्चों में दिव्य भावनामय संदेश प्रविष्टि किए जाते थे, तभी हमने राम, भरत, कृष्ण, आरुणि, भीष्म, अर्जुन, हनुमान जैसे नवरत्नों को प्राप्त किया। अत: आज पुन: संस्कारों के महत्व को समझने की आवश्यकता है। चरित्रवान और जाति का उज्जवल मुख करने वाले बच्चों की प्राप्ति के लिए यह अनिवार्य है की माता-पिता स्वयं भी चरित्रवान, संयमी और भारतीय संस्कृति के आदर्शो से युक्त आचरण संपन्न बनें, क्योंकि जो स्वयं अच्छे हैं, वही दूसरों को भी अच्छे बन सकते हैं। बच्चे जैसा देखते हैं, वैसा ही करते हैं। उन्हें व्याख्या नहीं, क्रियात्मक मूलक उपदेश चाहिए और यह स्वयं के सदाचरण से ही संभव हो सकता है। अत: यदि आप चाहते हैं कि आपके बालक सदाचारी, संयमी, जाति और राष्ट्र के सेवक बनें, तो अपने स्वयं के जीवन को आदर्शतम् बनाएं। बालकों में आज पाश्चात्य सभ्यता निरंतर घर करती जा रही है, अत: यह अनिवार्य है कि उनमें जाति और धर्म के प्रति श्रद्धा और दर्द पैदा किया जाए। इसके लिए यह आवश्यक है कि उन्हें दान की महत्ता समझाई जाए अपनी आमदनी में से कुछ रकम आप स्वयं समाज, साहित्य एवं अन्य आदर्श कार्यो के लिए खर्च करते रहिए। अपने घर पर धर्म-घट रखिए। नित्यप्रति भोजन करने से पूर्व जिस तरह आप साधुओं और भिखारियों को दान देते हैं, इस तरह इसे भी घर का महात्म्य मानते हुए। भिक्षा दीजिए। क्योंकि यह आपके घर का अपना महात्म्य होगा, अत: उसे परिवार का हर सदस्य दान दे। उसमें किसी एक प्रकार का अनाज अथवा कुछ धनराशि स्वयं आप अपने बालकों से डलवाइये। इस प्रकार उनमें त्याग और दान की भावना जागृत होगी। बाद में आप उस रकम से स्वयं सत्साहित्य खरीदिए, सद्संस्थाओं को दान दीजिए अथवा किसी आदर्श कार्य में खर्च कर दीजिए।

आप इस बात का भी ध्यान रखिए कि अपने बालक में केवल सद् प्रवृत्तियों को ही बढ़ने और विकसित होने दें। यदि आपने उसे अपनी निगाहों के सामने ही रखकर आचरणवान बनाया तो वह निश्चय ही जाति और धर्म रक्षक बनेगा, नहीं तो जो स्थिति होगी, वह सामने है। आप अपने बालकों को सुसंस्कारी बनाने का पूरा-पूरा ध्यान रखने का प्रयत्न करें तो यही आज जाति और धर्म के उत्थान का एक सरल और उपादेयतम मार्ग होगा। ❐

सेवा भारती के कार्यों में नारीशक्ति की भूमिका

■ डॉ. निर्मला सिंह

भारतीय संस्कृति में माँ का स्थान सबसे ऊंचा माना गया है। हम सभी कार्य शुभारंभ करने से पहले 'भारत माता की जय' का उद्घोष लगाते हैं। सेवा भारती में कार्यरत् माता-बहिनों द्वारा हमारे ग्रंथों में जो सामाजिक समरसता का संदेश दिया है उसी को आधार मानकर कार्य करती हैं।

सेवा भारती में मातृशक्ति का योगदान सर्वोपरि है। माँ के कई रूप हैं, घर में पुत्र हो पुत्री हो, जन्म देने वाली माँ ही है। पुत्र को जन्म लेने पर कोई उसे राम या कृष्ण नहीं कहता सभी कहते हैं लड़का हुआ है। लेकिन पुत्री के जन्म लेने पर कहते हैं लक्ष्मी माँ आई है। जन्म लेते ही मां की श्रेणी में आ जाती है, सेवा भारती नवरात्रों में सेवा बस्तियों में 3 साल से 12 साल की बच्चियों को नवदुर्गा माता के रूप में मानकर उनका विधि विधान से पूजन करती है। उनके चरण धोकर तौलिया से गीले चरणों को साफ कर, तिलक लगाकर, मौली बांधती है, चावल लगाती है एवं उनसे आशीर्वाद लेते हैं एवं माँ की भेंट भी चढ़ाते हैं, भोजन कराते हैं।

यह माँ का प्रथम स्वरूप है। इस कार्य में सेवा भारती की मातृशक्ति का योगदान रहता है। समाज के सभी वर्गों की कन्याओं का एकसाथ ही एक ही पंगत में बैठना सभी को माँ के समान नवदुर्गा मानकर पूजन करना सेवा भारती की सामाजिक समरसता की अनूठी पहल है। सेवा भारती इन बच्चियों के लिए संस्कार युक्त बाल संस्कार केन्द्र चलाती है। इन केन्द्रों का संचालन अधिकतर मातृशक्ति द्वारा ही किया जाता है। बाल संस्कारों के माध्यम से हमारे त्यौहारों को बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। इसमें रक्षाबंधन का पर्व समाज को एक करने एवं सामाजिक समरसता, बंधुत्व भावना एवं सामाजिक कर्त्तव्यों, दायित्वों को पूरा करने की प्रेरणा देती है। इन

सभी का बोध समाज में कार्यरत् महिला वर्ग द्वारा ही किया जाता है। यह संकल्प करते हैं कि हम सभी भारत माता की संतान हैं। हममें कोई भेद नहीं है हम सब एक हैं। सेवा भारती महिलाओं द्वारा बच्चों के अच्छे संस्कार देने हेतु बाल संस्कार केन्द्र चलाती है। कम्प्यूटर केंद्र का संचालन करती है एवं स्वावलंबी समाज के निर्माण हेतु सिलाई केंद्र फैशन डिजाइनिंग का कोर्स महिलाओं द्वारा ही चलायें जाते हैं। इसके साथ ही सेवा भारती महिलाओं द्वारा स्वयं सहायता समूह (वैभवश्री) इसमें कम से कम 10 महिलाएं अधिकतम 20 महिलाओं का समूह छोटी-छोटी मासिक बचत से अपने सामाजिक कार्यों में सहयोग लेती है एवं सामाजिक कुटीर उद्योग भी चलाती है। समय-समय पर सेवा बस्तियों में स्वास्थ्य चेतना के माध्यम से महिलाओं व बच्चों का स्वास्थ्य परीक्षण कर उनके स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखने का पूरा प्रयास सेवा भारती में कार्यरत महिलाओं द्वारा किया जाता है। सेवा भारती अपने केन्द्रों के माध्यम से अपना घर कैसा हो, कैसे रहा जाए, इसका ज्ञान सभी बच्चों व महिलाओं को कराती है। इसके लिए सेवा भारती स्वामी विवेकानंद जी के ध्येय वाक्य 'नर सेवा, नारायण सेवा' व सभी परमात्मा की सन्तानें हैं का अनुसरण करती है। सेवा भारती सभी को सिखाती है कि हम सब भारत माता की संतान हैं। हम सभी माँ के चरणों में रहकर शोषित, पीड़ित व अभावग्रस्त समाज को ईश्वर का रूप मानकर इस समाज को मातृशक्ति द्वारा सेवा के माध्यम से स्वस्थ, स्वच्छ एवं व्यसन मुक्त समाज निर्माण हेतु कार्य कर रही है। एक संस्कारित माता ही संस्कारित संतानों की जननी हो सकती है और यह उसमें सामर्थ्य भी है, क्योंकि राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के शब्दों में यही भाव परिलक्षित होता है-

अरे अबला नहीं मात,
वह मातृशक्ति अधिकारी।
एक नहीं दो-दो माताएं,
नर से भारी नारी॥ ❐

आयुर्वेद के अनुसार वर्षा ऋतु में आहार-विहार

■ डॉ. निर्मला सिंह

मानसून के दौरान जलाशयों में उपलब्ध पानी पचाने में अपेक्षाकृत भारी होता है और इस दौरान चयापचय धीमा होता है। इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए व्यक्ति को अपने आहार में निम्नलिखित बदलाव करने की आवश्यकता है –

- जौ, चावल और गेहूं से बने हल्के और ताजे खाद्य पदार्थों का सेवन करें।
- दैनिक आहार में गाय का घी, दाल, मूंग, चावल और गेहूं शामिल करें।
- प्रत्येक भोजन से पहले अदरक का एक छोटा टुकड़ा सेंधा नमक के साथ खाएं।
- सब्जियों का खट्टा और नमकीन सूप लें। सूप में प्याज और सब्जियों का भी इस्तेमाल किया जा सकता है।
- यदि भारी बारिश के कारण दिन ठंडे हैं, तो खट्टा, नमकीन और तेलयुक्त आहार लें।
- उबालकर ठंडा किया हुआ पानी थोड़ा शहद मिलाकर पिएं।
- अपने दैनिक आहार में अदरक और हरे चने को शामिल करें।
- गर्म भोजन खाएं और बिना पके खाद्य पदार्थ और सलाद खाने से बचें।
- अधिक मात्रा में ठंडे तरल पदार्थ पीने से बचें क्योंकि इससे चयापचय धीमा हो जाता है।
- बासी भोजन का सेवन करने से बचें।
- मानसून के दौरान पत्तेदार सब्जियाँ खाने से बचें।
- दही, लाल मांस और ऐसे खाद्य पदार्थों से बचें जिन्हें पचने में अधिक समय लगता है। दही की जगह छाछ पी सकते हैं।

जीवनशैली (वर्षा ऋतु)

केवल स्वस्थ आहार लेने से वांछित लाभ नहीं मिल सकता है जबतक कि स्वस्थ जीवनशैली का समर्थन न हो। बरसात के मौसम में अपनी जीवनशैली में कुछ महत्वपूर्ण बदलाव करने चाहिए:

- दिन में सोने से बचें क्योंकि इससे पाचन क्रिया बाधित होती है और चयापचय धीमा हो जाता है।
- अत्यधिक परिश्रम और धूप में अधिक समय बिताने से बचें। दोपहर की धूप में बाहर निकलने से बचें।
- अपने आस-पास का वातावरण हमेशा सूखा और साफ रखें। आस-पास पानी जमा न होने दें।
- शरीर को गर्म रखें क्योंकि शरीर का तापमान कम होते ही वायरस तुरंत हमला करते हैं।
- गीले बाल और नम कपड़े पहनकर वातानुकूलित कमरे में प्रवेश न करें।
- बरसात के मौसम में गंदे पानी में चलने से बचें। अपने पैरों को सूखा रखें।
- बारिश में भीगने से बचें। अगर आप भीग जाते हैं, तो संक्रमण से बचने के लिए जल्द से जल्द सूखे कपड़े पहन लें, क्योंकि इस मौसम में रोग प्रतिरोधक क्षमता कम होती है।
- आयुर्वेदिक ग्रंथों में भी लोबान और सूखी नीम की पत्तियों के धुएं से कपड़े सुखाने की सलाह दी गई है।
- पंचकर्म किया जा सकता है।
- इस मौसम में इत्र का उपयोग करने की सलाह दी जाती है।

आयुर्वेद में कहा गया है कि जब मौसम बदल रहा हो और व्यक्ति उस मौसम के अनुसार अपनी जीवन-शैली और आहार में बदलाव करता है, तो यह बदलाव 15 दिनों की अवधि में धीरे-धीरे होना चाहिए। धीरे-धीरे पुरानी जीवन-शैली को छोड़ने और नई जीवन-शैली अपनाने की कोशिश करें। अगर बदलाव बहुत ज्यादा हो जाते हैं तो शरीर उनका सामना नहीं कर पाता और इससे समस्याएँ हो सकती हैं। ❐

कमाने वाली बहू

■ प्रियंका पटेल

मां, तू हमारे साथ मुंबई चल। बाबूजी थे तब बात अलग थी, अब गांव में अकेले कैसे रहोगी? बेटा सुबोध ने कहा।

"मैं सोच में पड़ गई।'' दिल का दौरा आने से पति की अचानक मृत्यु हो गई थी। मैंने खुद को समझाने की बहुत कोशिश की, लेकिन तेरहवीं के बाद सब लोग चले गए।

बेटा सुबोध और बहू शिफाली दोनों इंजीनियर थे।

एक सहेली ने कहा कि कमाने वाली बहू को वृद्ध मां की कोई चिंता नहीं होती; वे तुम्हें परेशान कर सकती हैं और तुम्हारा जीवन मुश्किल बना सकती हैं। जिंदा रहते हुए, बाबूजी ने अपनी सारी प्रॉपर्टी बेटे के नाम कर दी थी, जिससे बेटा और बहू मकान बेच सकते हैं और पैसे भी ले सकते हैं।

65 साल की उम्र में, घुटनों के दर्द की वजह से राशन की दुकान चलाना भी मुश्किल हो रहा था। तेरहवीं का पूरा खर्च बेटे ने उठाया, लेकिन छोटे-मोटे खर्चों के लिए हाथ फैलाना पसंद नहीं था। बचाए हुए थोड़े पैसे भी खर्च हो गए थे, और अब मेरे पास 50 रुपये भी नहीं थे। इसलिए सुबोध को कोई उत्तर नहीं दे सकी।

इतने में शिफाली ने कहा, "मां, कौन सी साड़ी रखनी है? मैं आपका बैग पैक कर रही हूँ।" शिफाली की बात सुनकर मैंने चुपचाप उनके साथ मुंबई जाने का निर्णय लिया।

मुंबई में, सुबोध और शिफाली ने मेरा बहुत ख्याल रखा। हम सब मिलकर खाना खाते थे और बाहर घूमने जाते थे। शिफाली और सुबोध ने मुझे खुश रखने का पूरा प्रयास किया। मैंने महसूस किया कि आजकल के लोग बेवजह

कह देते हैं कि लड़के और लड़कियां वृद्ध माता-पिता की देखभाल नहीं करते, खासकर अगर बहू कमाने वाली हो तो। लेकिन मैंने देखा कि हर बहू एक जैसी नहीं होती।

एक दिन, हम सब मॉल में गए। वहां घूमते समय, सुबोध और शिफाली एक दुकान पर कुछ खरीदने के लिए रुके। मैं और आर्यन थोड़े आगे गए। आइसक्रीम की दुकान देख कर आर्यन ने कहा, "दादी, मुझे आइसक्रीम चाहिए।" मेरे पास पैसे नहीं थे। इतने दिन में कभी पैसों की जरूरत नहीं पड़ी, लेकिन अब पैसे की कमी हो गई थी।

"बेटा, मैं पर्स घर में भूल गई," मेरे ऐसा बोलते ही आर्यन मेरी तरफ एक अलग नजरों से देखने लगा। उसे लगा कि आइसक्रीम दिलानी नहीं है, इसलिए दादी बहाने बना रही है। पर मैं क्या कर सकती थी? मुझे तो खुद पर ही शर्म आ रही थी कि मैं कैसी दादी हूं जो अपने पोते को आइसक्रीम नहीं दिला सकती। हमने बाहर ही खाना खाया। शेफाली ने मेरी पसंद की काजू मसाले की सब्जी भी ऑर्डर की थी, पर मुझे वह अच्छी नहीं लग रही थी।

घर आने के बाद सबने थोड़ा टीवी देखा। सुबोध सोने चला गया और आर्यन को क्या चाहिए और क्या नहीं, यह देखने के लिए शेफाली उसके कमरे में गई। मैं भी अपने कमरे में सोने जा रही थी, तभी मुझे आर्यन की आवाज सुनाई दी। "मम्मी, दादी बहुत कंजूस हैं।"

"तू ऐसा क्यों बोल रहा है?" शेफाली ने पूछा।

"हां मम्मी, जब हम मॉल में घूम रहे थे, तब मैंने दादी से आइसक्रीम मांगी थी। लेकिन नहीं दिलाई। यह अच्छा है क्या?"

मम्मी: "क्या बोल रहे हो? दादी के बारे में ऐसा कहने से पहले तुमने सोचा नहीं क्या? तुम्हारी दादी इस वक्त कितनी दुखी हैं, यह तुम समझ नहीं सकते। दादा जी के बिना तुम्हारी दादी कैसे रहती होंगी? सोच, अचानक तेरे मम्मी-पापा तुझसे बहुत दूर चले जाएं, इतने दूर कि वे कभी वापस नहीं आएं, तब तुझे बड़ा दुख नहीं होगा क्या?"

"नहीं मम्मी, मैं तुम दोनों के बिना नहीं रह सकता," आर्यन ने बोला।

"बेटा, फिर सोच कि दादाजी के बिना तेरी दादी कैसे रहती होंगी? ऐसी स्थिति में हो सकता है कि वे अपना पर्स घर भूल गई होंगी। तूने उन्हें कंजूस कहा, उनका प्यार तुझे दिखाई नहीं दिया क्या? जब भी तुझे स्कूल से आने में 5 या 10 मिनट भी देर हो जाती है, तब वे बरामदे में खड़ी रहकर तेरा इंतजार करती हैं। उनके घुटने दर्द करते हैं, फिर भी। बेटा, किसी के बारे में राय बनाने से पहले उसके दृष्टिकोण से सोचना चाहिए।"

एक सहेली ने कहा कि कमाने वाली बहू को वृद्ध मां की कोई चिंता नहीं होती; वे तुम्हें परेशान कर सकती हैं और तुम्हारा जीवन मुश्किल बना सकती हैं। जिंदा रहते हुए, बाबूजी ने अपनी सारी प्रॉपर्टी बेटे के नाम कर दी थी, जिससे बेटा और बहू मकान बेच सकते हैं और पैसे भी ले सकते हैं।

ये बातें सुनकर मुझे मेरी बहू पर बहुत गर्व हुआ। अगर मैं उसकी जगह होती, तो कभी भी अपने बेटे को इतने अच्छे से समझा नहीं पाती। अगले दिन सुबह-सुबह सुबोध ऑफिस गया और आर्यन स्कूल। शेफाली भी ऑफिस जाने लगी, जाते-जाते उसने मेरे हाथ में कुछ पैसे देने की कोशिश की।

"यह क्या बेटा, मुझे पैसों की क्या जरूरत है?" मैंने कहा।

"मां, किसे कब पैसों की जरूरत पड़ जाए, कह नहीं सकते। आप मंदिर जाती हैं, कभी दान पेटी में डाल देना। कभी आर्यन कोई चीज के लिए ज़िद करे तो आप उसे वह चीज दिला देना।"

"पर बेटा, समझा करो मैं नहीं ले सकती।"

मां जी! अगर यही पैसे सुबोध ने आपको दिए होते तो क्या आपने मना किया होता? नहीं ना। तो आपकी बहू भी कमाती है, तो आप अपनी बहू से पैसे क्यों नहीं ले सकतीं?"

शेफाली की बात सुनकर मेरी आंखों में आंसू आ गए। जो मेरा बेटा नहीं समझा सका, वह मेरी बहू ने समझा दिया।

मेरी बहू जैसी बहू सबको मिले। मैंने भगवान से प्रार्थना की कि ऐसी बहू मुझे हर जन्म में मिले। लोग बिना किसी कारण नौकरी करने वाली बहू का दुर्व्यवहार देखकर सब नौकरी वाली बहुओं को दोष देते हैं। कुछ शेफाली जैसी समझदार और बड़ों का आदर करने वाली होती हैं।

फेसबुक वॉल से... ❐

पर्यवेक्षक प्रशिक्षण एकदिवसीय कार्यशाला

गत 4 अगस्त, रविवार को सेवा भारती सेवाधाम विद्या मंदिर मंडोली, दिल्ली में पर्यवेक्षक प्रशिक्षण एकदिवसीय कार्यशाला

आयोजित हुई। कार्यशाला का प्रारंभ विद्या भारती के गीत से हुआ। इसमें कुल उपस्थिति 30 थी। मुख्य वक्ता थे अखिल भारतीय छात्रावास प्रमुख श्री जयदेव। पहले कालांश में उन्होंने छात्रावास की भूमिका क्या है? अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली व भारतीय शिक्षा प्रणाली में अंतर (चिंतन), प्राचीन शिक्षा पद्धति, पंचायत वयवस्था, दास प्रथा, भारतीय जीवन पद्धति आदि विषयों पर चर्चा की। दूसरे सत्र में श्री जयदेव ने चयन प्रक्रिया, छात्रावास का सामाजिक बोध, छात्रावास कानूनी पक्ष एवं लेखाजोखा, छात्र के जीवन में छात्रावास की भूमिका आदि विषयों पर विचार व्यक्त किए।

तृतीय सत्र में उन्होंने छात्रावास निर्माण में बच्चों का सहयोग कैसे ले सकते हैं, यदि बच्चा किसी प्रकार की गलती करता है तो शारीरिक दण्ड न देकर ऐसा दंड देना, जो वो आसानी से कर सके जैसे-किसी किताब की रीडिंग या सुलेख लिखना आदि विषयों को बताया। कार्यक्रम का समापन कल्याण मंत्र के साथ हुआ। ❐

हवन-भण्डारा कार्यक्रम

गत 18 अगस्त को झण्डेवाला विभाग, मुखर्जी नगर जिला के आदर्श नगर के सुभाष पार्क में हवन व भण्डारा का आयोजन किया गया। सेवा भारती दिल्ली प्रांत से श्रीमती संगीता त्यागी का बौद्धिक एवं मार्गदर्शन मिला। जिला से उपस्थित रहे जिला मंत्री सुरेन्द्र गुप्ता जी, सुरेश जी, वीरेन्द्र अरोड़ा जी आदि। आदर्श नगर की भजन मंडली ने बहुत ही सुन्दर-सुन्दर भजन गाकर समा बांध दिया।

झण्डेवाला विभाग, मुखर्जी नगर जिला के श्री बाला साहब देवरस सेवा केन्द्र पर नन्हें-मुने बच्चे शिक्षा एवं संस्कार ग्रहण करते हुए। ❐

स्वतंत्रता दिवस एवं रक्षाबंधन के कार्यक्रम

■ प्रतिनिधि

केशवपुरम विभाग

केशवपुरम विभाग में 15 अगस्त को सरस्वती विहार जिले में सामूहिक रूप से स्वतंत्रता दिवस कार्यक्रम जी.पी. ब्लॉक, पीतमपुरा में मनाया गया। इसमें विभाग व जिला के गणमान्य सदस्य दानदाता, पुरुष कार्यकर्ता, महिला कार्यकर्ता, निरीक्षिका बहन, शिक्षिका बहनें व सेवितजन उपस्थित रहे। सबसे पहले राष्ट्रगान हुआ। उसके बाद सारे जहां से अच्छा गीत गया गया। बालवाड़ी /बाल संस्कार के बच्चों ने देशभक्ति गीत, कविता, भाषण व नृत्य की बहुत अच्छी प्रस्तुति दी। स्वावलम्बन की बहनों ने भी बहुत अच्छे नाटक (भ्रष्टाचार मिटाओ) नृत्य (पानी बचाओं) देश भक्ति नृत्य की बहुत अच्छी झलक की प्रस्तुतियां दीं। बच्चों की प्रस्तुति के लिए उनको पुरस्कार दिये गये। यह पुरस्कार दानदाताओं के द्वारा दिलाया गया। सहभोज हुआ। विभाग मंत्री श्री राम सेवक जी ने स्वतंत्रता दिवस व नारी शक्ति मार्च के लिये सबको जागृत किया।

सरस्वती विहार जिला

18 अगस्त को सरस्वती विहार जिले में रक्षाबंधन का पर्व जिला स्तर पर मनाया गया। इसमें विभाग से घुमंतू समाज प्रकल्प पमुख रोहित जी, जिले से जिला मंत्री अनुज गुप्ता जी, सहमंत्री ज्ञान स्वरूप तिवारी जी तथा शिक्षिका बहनें उपस्थित हुईं। सबसे पहले शिक्षिका बहनों द्वारा राखी की थाली तैयार की गई। पूरे विधि-विधान के साथ राखी का त्योहार मनाया गया। शिक्षिका व कार्यकर्ता को बहुत खुशी

हुई। शिक्षिका बहनें व कार्यकर्ताओं ने मिलजुल यह पर्व मनाया। जलपान के साथ समापन किया गया।

जनक जिला

गत 26 अगस्त को सेवा भारती जनक जिला और मोहन मंदिर कमेटी ने मिलकर जन्माष्टमी का पर्व मनाया। ईश्वर की कृपा से यह कार्यक्रम शानदार रहा। सेवा भारती की सभी शिक्षिकों और बच्चों ने झांकियां तैयार कीं। इन झांकियों के माध्यम से अपनी संस्कृति और परंपरा को बताने को प्रयास किया गया। मोहन मंदिर कमेटी के सभी सदस्यों ने इस

कार्यक्रम के लिए कड़ी मेहनत की। इन लोगों के प्रयासों से इस कार्यक्रम में सेवा बस्तियों के बच्चों ने सहभागिता की। उन बच्चों के उत्साह और आत्मविश्वास को देखकर हर कोई दंग रह गया।

रविदासपुरी

स्वतंत्रता दिवस के पावन अवसर पर रविदासपुरी में बाला साहब देवरस सेवा केन्द्र पर कार्यक्रम आयोजित हुआ। इसमें सेवा भारती के कार्यकर्ताओं के साथ ही जहांगीरपुरी थाने के एसएचओ साहब उपस्थित हुए। सभी ने तिरंगा फहराया। साथ ही बच्चों को मिष्ठान वितरण किया।

पूर्वी विभाग

स्वतंत्रता दिवस समारोह पूर्वी विभाग के सभी जिलों के समस्त केन्द्रों पर उत्साहपूर्वक मनाया गया । सेवितजनों ने देशभक्ति गीतों (एकल व सामूहिक) प्रस्तुत किए। प्रभावशाली नाटक मचन कराया गया। तिरंगा फहरा कर राष्ट्र गान कर तिरंगे को नमन किया गया। अन्त में सभी को उपहार भी दिए गए।

स्ट्रीट चिल्ड्रेन प्रकल्प

गत 12 अगस्त को सेवा भारती, स्ट्रीट चिलड्रन प्रकल्प, कलंदर कॉलोनी, दिलशाद गार्डन में झंडारोहण एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का उत्साहपूर्वक आयोजन किया गया। वर्षा के बावजूद बच्चों के उत्साह में कोई कमी नहीं आई। झंडरोहण शाहदरा जिला के प्रसिद्ध समाजसेवी एवं उद्योगपति माननीय श्री संजय गोयल जी के द्वारा किया गया। कार्यक्रम में प्रकल्प कार्यकारिणी के सभी सदस्य भी सम्मिलित हुए। झंडारोहण के उपरांत दीप प्रज्वलन एवं माँ सरस्वती की वंदना से सांस्कृतिक कार्यक्रमों की विधिवत शुरुआत हुई। तत्पश्चात एकल एवं सामूहिक योगासन प्रदर्शन हुआ। उसके बाद विभिन्न राज्यों के लोकनृत्यों का भी प्रदर्शन केंद्र के बालक-बालिकाओं द्वारा किया गया। इस प्रकार कई सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। अंत में कार्यकारिणी के सदस्यों द्वारा

सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति के बाद प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कारों की घोषणा की गई। तत्पश्चात कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री संजय गोयल जी के द्वारा उपस्थित जनसमूह के समक्ष उद्‌बोधन हुआ। प्रकल्प प्रमुख श्री ज्ञान प्रकाश गुप्ता जी के द्वारा कार्यक्रम में पधारे सभी लोगों के धन्यवाद ज्ञापन कार्यक्रम के अंत में हुआ। तत्पश्चात वन्देमातरम गीत के साथ झण्डा अवरोहण का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। उपस्थित सभी लोगों को नमकपारे एवं बूंदी का प्रसाद वितरित किया गया। उसके बाद केंद्र के बच्चों, शिक्षक-शिक्षिकाओं एवं कार्यकारिणी के सदस्यों ने भोजन ग्रहण किया। और इस प्रकार स्वतन्त्रता दिवस का यह कार्यक्रम उत्साह एवं उल्लासपूर्वक मनाया गया।

यमुना विहार थाना

रक्षाबंधन के पावन अवसर पर सेवा भारती, यमुना विहार के कार्यकर्ता बहनों द्वारा यमुना विहार थाने में पुलिस विभाग को रक्षासूत्र बांधकर कार्यक्रम मनाया। इस अवसर पर श्री संतोष जी (विभाग कार्यकारिणी सदस्य), सुरेन्द्र जी जिला मंत्री एवं शिक्षिकाएं सहित अन्य कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

उत्तम जिला

स्वतंत्रता दिवस समारोह सेवा भारती उत्तम जिले के सभी केन्द्रों पर बडी धूमधाम से मनाया गया। बच्चों ने देशभक्ति के अच्छे अच्छे गीत सुनाए। उन्हें स्वतंत्रता दिवस के महत्व

के बारे में बताया गया। उत्तम नगर के शिवानी केन्द्र पर ध्वजारोहण श्री राजीव बतरा जी ने किया। इस अवसर पर जिला टोली महिला समिति और शिक्षिकाओं की उपस्थिति सराहनीय रही। प्रांत से श्री राजेन्द्र तिवारी जी उपस्थित रहे। उन्होंने स्वतंत्रता आन्दोलन पर प्रकाश डाला साथ ही 16 अगस्त को होने वाली नारी शक्ति मार्च में जाने हेतु आवाहन किया और उसे सफल बनाने के लिए सबके सहयोग का निवेदन किया। कार्यक्रम के अंत में प्रसाद की व्यवस्था रही।

उत्तम जिले का रक्षाबंधन पर्व 17 अगस्त को ब्रह्मकुमारी (ओम् शांति) की बहनों के साथ पूरे उत्साह के साथ मनाया गया। ब्रह्म कुमारी बहनों ने सबको राखी बांधी और मिष्ठान्न खिलाए और उपहार स्वरूप सबको अपने कम से कम एक बुराई छोड़ने को कहा। उन बहनों का मार्गदर्शन सराहनीय रहा। जीवन के यथार्थ को समझाया। श्री राजेन्द्र तिवारी जी ने सेवा भारती का परिचय उत्तम प्रकार से दिया। भजन मंडली की बहनों और शिक्षिकाओं ने अच्छे-अच्छे भजन गाए। निरीक्षिका श्रीमती रंजना जी ने कार्यक्रम की सफलता के लिए सराहनीय कार्य किया। अंत में जलपान की उत्तम व्यवस्था रही। ❐

हरियाली तीज उत्सव के कार्यक्रम

पूर्वी विभाग

पूर्वी विभाग के प्रत्येक जिले में हरियाली तीज उत्सव उत्साहपूर्वक, मेंहदी लगाकर, गीत-संगीत के साथ मनाया गया। इस त्योहार पर हरे रंग की प्रधानता रही। हरे पोशाकों में सजी बहनों ने उत्सव में समां बांध दिया। 6 अगस्त को जगदम्बा सेवा केन्द्र कोंडली गांव में हरियाली तीज का त्योहार मनाया गया। इसमें सभी केन्द्र की शिक्षिकाओं व विभाग से माधुरी जी, जिला से रूपम जी व प्रीति जी, ज्योति लहोटी जी एवं निरीक्षिका /शिक्षिका साथ ही भजन मंडली बहनों की भागीदारी रही। मेंहदी प्रतियोगिता आयोजित की गई। सभी बहनों ने सुन्दर-सुन्दर सावन के गीत गाए व नृत्य भी किया। अन्त में जलपान वितरण किया गया। प्रथम व द्वितीय को पुरस्कृत भी किया गया।

6 अगस्त को अम्बेडकर सेवा केन्द्र में तीज उत्सव मनाया गया। इसमें विभाग से मंत्री राजश्री जी तथा जिले से कार्यकर्ता उपस्थित रहे। इसमें सिलाई और सौन्दर्य एवं कम्प्यूटर के सेवितजनों को सर्टिफिकेट भी दिए गए। कुछ खेल भी कराए गए तथा शिक्षिकाओं को भी संगीतमय कुर्सियां का खेल कराया गया। खेलों में प्रथम आने वालों को उपहार भी दिए गए। ❐

कलंदर कॉलोनी

सेवा भारती, स्ट्रीट चिल्ड्रन प्रकल्प कलंदर कॉलोनी, दिलशाद गार्डन में हरियाली तीज के शुभ अवसर पर 7 अगस्त को सामूहिक रूप से तीज एवं भजन कीर्तन का आयोजन हुआ। बस्ती की दो भजन मंडलियों ने सम्मिलित होकर कार्यक्रम की शोभा को बढ़ाने का कार्य किया। इसमें सेवा बस्ती की लगभग 80 महिलाओं की सहभागिता रही। कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ दोपहर 02 बजे से गौरी-शिव जी के भजन से हुआ। कार्यक्रम में सम्मिलित सभी महिलाओं ने उत्साहपूर्वक तीज मिलन का कार्यक्रम भजन कीर्तन गाकर मनाया। कार्यक्रम में उपस्थित सभी जनों को अल्पाहार के रूप में चाय आदि का वितरण किया गया। कार्यक्रम का समापन सायं 04.15 पर हुआ। समापन के उपरांत उपस्थित सभी जनों ने प्रसाद के रूप में पूड़ी-सब्जी ग्रहण किया। इस प्रकार इस वर्ष सामूहिक रूप से हरियाली तीज त्योहार को बस्ती की महिलाओं ने धूमधाम से केंद्र में शिक्षिकाओं एवं छात्राओं के साथ मनाया। ❐

उत्तम नगर जिला

गत 3 अगस्त को सेवा भारती उत्तम नगर जिला, पश्चिम विभाग, में तीज का हरा-भरा कार्यक्रम मनाया गया। कार्यक्रम का आरंभ महिला अध्यक्ष श्रीमती रमा जी द्वारा हवन की आहुतियों से किया। इसमें यजमान श्रीमान राजेंद्र तिवारी जी, श्री राजीव बत्रा जी, जिला अध्यक्ष श्रीमान बृजलाल मग्गो जी जिला मंत्री, श्रीमान तारकनाथ जी एवं सभी महिला मंडल की सदस्यों और शिक्षिकाओं ने भाग लिया। तत्पश्चात् भजन मंडली की बहनों ने गीत, संगीत एवं भजनों की झड़ी लगाकर इस त्योहार को और आनंदमय बना दिया। अंत में श्रीमती रमा जी द्वारा बहनों को भेंट दी गई। ❐

झण्डेवाला विभाग

झण्डेवाला विभाग के अन्तर्गत, पटेल नगर जिला में नारायणा गाँव केन्द्र पर कार्यकर्ताओं एवं बच्चों ने मिलकर भजन कीर्तन, मेंहदी के साथ ही हंसी-खुशी से तीज पर्व मनाकर एक-दूसरे को बधाइयां दीं। ❐

द्वारका सेक्टर 16 में केंद्र का उद्घाटन

सेवा भारती उत्तम जिले का एक नया केन्द्र द्वारका सेक्टर 16 में इसी माह प्रारंभ किया गया। इसमें दो प्रकल्प (सिलाई और बालबाड़ी) चलते हैं। इसका विधिवत उद्घाटन 24 अगस्त को हवन के कार्यक्रम के साथ हुआ। यजमान श्री धर्मदेव जी (अध्यक्ष, सेवा भारती पश्चिमी विभाग) रहे। विभाग से श्री अनिल निगम जी, श्री राजीव बतरा जी और प्रांत से श्री राजेन्द्र तिवारी जी उपस्थित रहे। जिला टोली व महिला समिति का योगदान सराहनीय रहा। निरीक्षिका श्रीमती रंजना जी ने पूरी योजना के साथ कार्यक्रम को सफल बनाया। अंत में प्रसाद की उत्तम व्यवस्था रही। ❐

जन्माष्टमी के कार्यक्रम

झण्डेवाला

झण्डेवाला विभाग, पटेल नगर जिला, बुध नगर केन्द्र पर केन्द्र के बच्चों द्वारा भव्य रूप में जन्माष्टमी मनाई गई। बच्चे सज-धज कर आए और उन्होंने विभिन्न लीलाओं में हिस्सा लिया। केन्द्र की बहनों एवं कार्यकर्ताओं ने कड़ी मेहनत से कार्यक्रम को सफल बनाया।

पूर्वी विभाग

पूर्वी विभाग के सभी जिलों में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी धूम-धाम से मनाई गई। भजन-कीर्तन तथा कार्यक्रम के साथ ही झांकी आदि आयोजित की गई। सुविधा अनुसार सभी कार्यकर्ता केन्द्र पर गए। सेवितजनों द्वारा कृष्णलीला पर आधारित मंचन भी किया गया। केन्द्र के बच्चों ने इसमें बढ़-चढ़ हिस्सा लिया। इसमें कृष्ण लीला पर आध ारित प्रश्नोत्तरी भी हुई। अंत में प्रसाद का वितरण किया गया।

सबोली, मंडोली

गत 26 अगस्त को प्रताप नगर, सबोली, मंडोली, नगर जिला नंद नगरी, यमुना विहार विभाग में भीष्म सेवा, केन्द्र के बाल-बालिकाओं, अभिभावकों, शिक्षिकाओं व समाज के अन्य लोगों ने जन्माष्टमी का कार्यक्रम आयोजित किया। इस अवसर पर लोकगीत व लघु नाटिका 'श्रीकृष्ण जन्मोत्सव', कालिया नाग नाथ व कंस वध का मंचन किया गया। कार्यक्रम का संचालन भारती सिंह ने किया। इसकी पूर्व तैयारी शिक्षिका ललिता सिंह ने कराई। कार्यक्रम में विभाग मंत्री गवेंद्र जी उपस्थित रहे। शनि मंदिर हनुमान चालीसा की टोली के साथ उनके प्रमुख श्रीमान आकाश शर्मा भी उपस्थित रहे।

कलंदर कॉलोनी

सेवा भारती के कलंदर कॉलोनी स्तिथ केशव सेवा केंद्र में दिनांक 24 अगस्त 2024 दिन शनिवार को श्री कृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव को बड़े धूमधाम से मनाया गया। पूजन हेतू केंद्र में अध्ययन कर रहे बच्चों एवम केंद्र से अध्ययन कर चुके पुरातन छात्र-छात्राओं का विशेष सहयोग रहा। सेवाबस्ती की भजन मंडलीयों का भी विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम में बस्ती के लगभग 100 महिलाओं ने भी भाग लिया एवं सहर्ष श्री कृष्ण जन्माष्टमी का उत्सव मनाया। कार्यक्रम का शुभारंभ दोपहर 01.30 बजे से दीप प्रज्वलन एवम विधिवत पूजन के साथ हुआ। उसके बाद भजन मंडली के द्वारा भजन कीर्तन का कार्यक्रम हुआ। कार्यक्रम में प्रकल्प संरक्षक श्री मदन लाल खन्ना जी का उपस्थित लोगों के समक्ष उद्बोधन भी हुआ। उसके उपरांत भजन में सम्मिलित सभी महिलाओं एवम छात्र छात्राओं का सामूहिक भोजन केंद्र पर ही हुआ। भोजन के पश्चात उपस्तिथ सभी भक्तजनों को प्रसाद के रुप में पंचामृत, कसार-पंजीरी तथा केले आदि का प्रसाद वितरीत किया गया। संध्याकाल में 5:00 बजे कृष्ण जी की सन्ध्या आरती के साथ पूजन का समापन हुआ। सभी ने हर्षोल्लस के साथ इस पूजन के कार्यकम को सफल बनाया। ❐

केन्द्र अवलोकन एवं रक्षाबंधन

पूर्वी विभाग में 5 अगस्त 2024 को जिले में लक्ष्मीबाई केन्द्र, सोनिया कैंप, हेडगेवार भवन, कैलाश नगर, अहिल्याबाई केन्द्र, गीता कॉलोनी का अवलोकन कार्यक्रम रहा। इसमें प्रांत से भूपेन्द्र जी, विभाग से पवन जी और जिले से पंकज जी और निर्मल बहन जी रहे। सेवित जन बच्चियों ने सभी को राखी बांधी। सभी केन्द्रों पर सफाई व्यवस्था अच्छी थी। पौधे सुन्दर ढंग से लगाए गए थे तथा मंत्र आदि के चार्ट सुन्दर बने थे। शिक्षिकाओं से उनके प्रकल्पों के विषय में भी चर्चा हुई।

शाहदरा जिले के 3 केन्द्रों का अवलोकन के लिए प्रांत से कुंदन जी, विभाग से रामकरण जी और जिले से सहमंत्री विनीता जी, अनिल जी उपस्थित रहे। लवकुश केन्द्र झिलमिल पर शाहदरा जिला अध्यक्ष हेमा जी, पालक मधुर जी ने केन्द्र अवलोकन किया। साथ में शिक्षिका/निरीक्षिका और अन्य कार्यकर्ताओं का सराहनीय सहयोग रहा।

इन्द्रप्रस्थ जिले में केन्द्रों का अवलोकन रहा। इसमें प्रांत से श्री तरुण गुप्ता जी एवं श्री आलोक जी व ओंकारनाथ जी एवं विभाग से विनोद जैन जी उपस्थित रहे। जिले से रविन्द्र गोयल जी, कमल सिंह नेगी जी, अशोक गुप्ता एवं निरीक्षिका /शिक्षिका उपस्थित रहे। चार केन्द्रों का अवलोकन रहा। सभी केन्द्रों में अच्छी व्यवस्था, साफ-सफाई एवं बोर्ड यथास्थान लगे हुए मिले एवं सभी चीज व्यवस्थित सुन्दर देखने को मिली।

मयूर विहार जिले के तीन केंद्रों में कार्यकर्ता गए। प्रान्त से श्री निर्भय जी, कुन्दन जी, विभाग से केडीपी यादव जी, जिला अध्यक्ष तरुण राय जी व सह मंत्री रूपम मिश्रा जी रही, साथ में निरीक्षिका भी रही। सभी छात्रों से स्वच्छता व शिक्षा से सम्बन्धित चर्चा हुई। सभी शिक्षिकाओं का परिचय हुआ परिवार संबंधित चर्चा हुई। ❐

बांग्लादेश के विरुद्ध हिंदुओं का आक्रोश

बांग्लादेश में हिंदू महिलाओं एवम अन्य अल्पसंख्यकों के प्रति बढ़ते अत्याचार, अपराध और कट्टरता के विरोध में नारी शक्ति मंच फोरम द्वारा दिनांक 16 अगस्त 2024, शुक्रवार को देश की राजधानी दिल्ली में मंडी हाउस से जंतर मंतर ताकि पैदल मौन मार्च का आयोजन किया गया। सेवा भारती ने भी इस विरोध प्रदर्शन में भाग लिया, उसी कड़ी में सेवा भारती द्वारा संचालित प्रकल्प, स्ट्रीट चिल्ड्रन प्रकल्प द्वारा सेवित बस्ती की महिलाओं एवम् बड़ी लड़कियों ने भाग लिया।

पैदल मार्च का आयोजन प्रातः 11 बजे मंडी हाउस से प्रारम्भ हुआ जो दोपहर 1 बजे जंतर मंतर पर समाप्त हुआ।

केंद्र से कुल 60 महिलाओं एवम बालिकाओं ने इस विरोध प्रदर्शन मे भाग लिया। जिसमें उनके भोजन का प्रबंध केंद्र के द्वारा किया गया था। ❐

शुभ दत्तक ग्रहण समारोह

विगत 24 अगस्त, शनिवार को मातृछाया (पहाड़गंज) में बालिका कीर्ति के दत्तक ग्रहण समारोह के उपलक्ष्य में प्रातः 10 बजे से दोपहर 12.30 बजे तक का कार्यक्रम रहा। कुल उपस्थिति 45 रही। मुख्य अतिथि श्रीमती मीना महाजन 'सिद्धी फाउंडेशन' की प्रवर्तक और प्रमुख के हाथों द्वारा पुण्य 'दत्तक कार्य' संपन्न हुआ। बच्ची कीर्ति को आशीर्वाद तथा कीर्ति के माता-पिता को बधाई देने हेतु श्री हिमांशु अग्रवाल, सेवा भारती, करोलबाग जिला मंत्री, मातृछाया, पहाड़गंज के अध्यक्ष सीए श्री अशोक जालान, श्री मातृछाया की सचिव श्रीमती कविता गुप्ता, सेवा भारती से पधारी दो प्रशिक्षार्थी बहनें श्रीमती सुनीता शर्मा, श्रीमती संतोष सेठी, श्रीमती पूजा, श्रीमती मीना कुंद्रा, श्रीमान महेंद्र विद्यार्थी आदि ने कार्यक्रम में अपनी सहभागिता की। शास्त्री जी द्वारा मंत्रोच्चार के साथ दत्तक कार्यक्रम संपन्न करवाया गया और बच्ची कीर्ति को मांगलिक कार्यक्रम में दत्तक परिवार को सुपुर्द किया गया, जिसका अद्‌भुत अनुभव रहा। बेटी कीर्ति को दत्तक परिवार, जो मूलतः कलकत्ते के रहने वाले हैं, हाल में नोएडा से पधारे थे, के साथ विधिपूर्वक जोड़ा गया। ❐

BANSAL WIRE INDUSTRIES LTD.

BANSAL

Stainless Steel Wires - High/Medium Carbon Steel Wires
(Black and Galvonised)

Mfrs. : Low Carbon Steel Wires, Profile/Shaped Wires
(Black and Galvonised)

H.B. HHB & G.I. WIRES

Bansal Wire Industries Ltd.
F-3, Shastri Nagar, Delhi-110052 (India)
Tel. : +91-11-23648401, 23651890-91-92-93
Email : info@bansalwire.com, www.bansalwire.com

विज्ञापन के लिए आग्रह

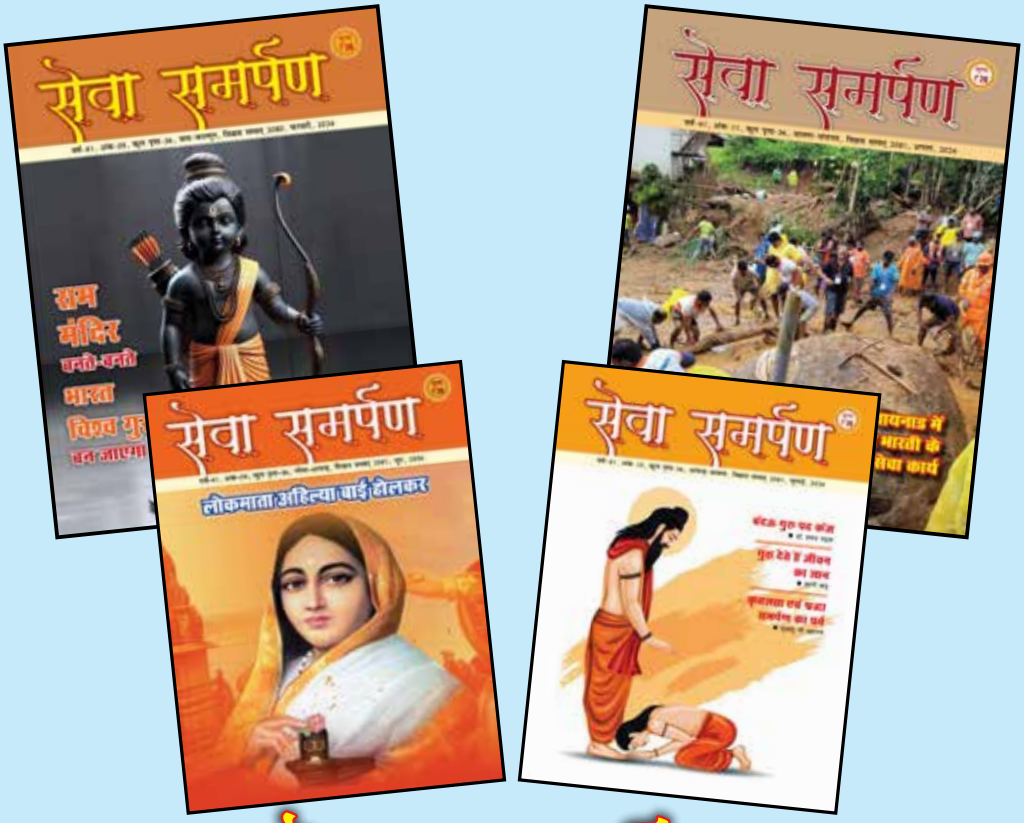

सेवा समर्पण

'सेवा समर्पण' पत्रिका समाज एवं संस्कृति के प्रति समर्पित, प्रतिष्ठित वर्ग, कार्यकर्ता एवं युवा वर्ग के बीच पिछले 41 वर्ष से 'नर सेवा-नारायण सेवा' के मूल मंत्र को लोकप्रिय बना रही है। इस पत्रिका द्वारा परिवार प्रबोधन, भारतीय जीवन शैली और संस्कारों से युक्त समसामयिक विषयों के साथ-साथ बच्चों, युवा वर्ग एवं महिलाओं संबंधी विषय सामग्री के द्वारा स्वावलम्बन, शिक्षा और संस्कारों को जन-जन तक पहुंचाने का विशेष कार्य हो रहा है। समय- समय पर किसी एक बिन्दु को केन्द्रित कर विशेषांक निकालने की योजना रहती है। आपसे प्रार्थना है कि अपने प्रतिष्ठान का विज्ञापन प्रकाशित कराएं और 50,000 पाठकों तक अपनी पहुंच बनाएं। यह पत्रिका सरकारी कार्यालयों, मंत्रालयों, पुस्तकालय, व्यापारी वर्ग, कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र, अन्य गैर-सरकारी संगठनों, अस्पताल इत्यादि स्थानों पर जाती है।

संपर्क करें-

सेवा भारती, 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001

फोन - 011-23345014-15

रजिस्टर्ड क्रमांक 40605/1983
तिथि 6-7 सितम्बर, 2024, प्रकाशन तिथि-5 सितम्बर, 2024
Posted at - LPC, DELHI RMS, DELHI-110006

डाक रजिस्टर्ड नं. U(C)-166/2022-24
DL(ND)-11/6188/2022-23-24
अग्रिम शुल्क के बिना प्रेषण

"AGARWAL PACKERS AND MOVERS LTD."

(नर सेवा - राष्ट्र सेवा)

APML

Nindra Daan Kendra for Truck Chaalak

(A Unique Concept to reduce Accidents on Roads by Trucks)

(ट्रक ड्राईवर देश का आंतरिक सिपाही है)

- 4,12,432 accidents happened yearly in India.
- Out of these accidents 1,53,972 lost their lives.
- Our Kendra saving 21 lives monthly on road to avoid sleep deprivation and stress.
- Empowering Drivers with respectful environment to provide them sound sleep with safe and secure parking space along with free barber, washroom facilities and all are free.

Pran Vayu Vahan

(कोविड के समय चल चिकित्सा)

- Modified trucks into "Oxygen Providers Van" during highest peak of COVID -II.
- Container converted into clinic within 24hrs.
- It is equipped with all facilities i.e. Oxygen cylinder, Beds, Oxygen Concentrator etc.
- Saved 543 Lives to provide Oxygen to highly vulnerable patients in association with Sewa Bharti.

Community Empowerment

(सामाजिक समरसता और अंत्योदय का जीवंत उदाहरण)

- Reducing inequalities to provide access to socially backward people to build temple of Sant Shiromani Kabir Ji Maharaj in Nalwa (Hisar) for their Spiritual well beings.
- Providing livelihood and skills to differently abled and financially backwards.
- Girl empowerment.
- Education to highly vulnerable children from villages and tribes.
- Adopted approach to reduce Carbon Emission to conserve environment.

09 300 300 300 www.agarwalpackers.com

मुद्रक/संपादक/प्रकाशक: डॉ.. शिवाली अग्रवाल द्वारा सेवा प्रकाशन न्यास के लिए 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित तथा शक्ति प्रिन्टर्स 1/3001, गली न.-16, रामनगर, मंडोली रोड, शाहदरा, दिल्ली-32, से मुद्रित।